॥ श्रीदुर्गासप्तशती ॥

श्री शीलप्प हरिप्रसाद शास्त्री

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीदुर्गासप्तशती ॥

श्री शीलप्प हरिप्रसाद शास्त्री

www.vedamantra.org

youtube:@vedamantra

Free Distribution

This PDF may be freely used, shared, uploaded, and distributed in its original form, provided that the contents and credits are not altered or removed.

— Vedamantra

॥ विषयसूची ॥

प्राक्कथन....4
॥ अथ सप्तश्लोकी दुर्गा ॥....9
॥ श्री दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥....10
॥ देव्याः कवचम् ॥....12
देवी माहात्म्यं — अर्गला स्तोत्रम्....17
देवी माहात्म्यं — कीलक स्तोत्रम्....20
॥ वेदोक्तं रात्रिसूक्तम् — सस्वरम् ॥....22
॥ अथ तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम् ॥....22
॥ देव्यथर्वशीर्षम् ॥....24
॥ अथ नवार्णविधिः ॥....29
॥ सप्तशतीन्यासः ॥....30
॥ अथ श्रीदुर्गासप्तशती ॥....32
॥ मधुकैटभवधो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥....32
॥ महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥....39
॥ महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥....45
॥ शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥....49
॥ देव्या दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥....54
॥ शुम्भनिशुम्भसेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥....61
॥ चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥....64
॥ रक्तबीजवधो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥....67
॥ निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः ॥....72
॥ शुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः ॥....76
॥ नारायणीस्तुतिर्नाम एकादशोऽध्यायः ॥....79
॥ फलश्रुतिर्नाम द्वादशोऽध्यायः ॥....84
॥ सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥....88
॥ वेदोक्तं देवीसूक्तम् ॥....91
॥ अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम् ॥....92
॥ अथ प्राधानिकं रहस्यम् ॥....94
॥ अथ वैकृतिकं रहस्यम् ॥....97
॥ अथ मूर्तिरहस्यम् ॥....100
॥ देवी माहात्म्यं — अपराध क्षमापणा स्तोत्रम् ॥....102

प्राक्कथन

या शक्तिः सकलं चराचरमिदं व्याप्य स्थिता शाश्वती ।
या माताऽखिलजीवपोषणकरी विश्वस्य मूलं परम् ।
या चान्तर्हृदये प्रकाशमयिनी बोधस्वरूपा परा ।
तां दुर्गां शरणं व्रजामि सततं विश्वेश्वरीमम्बिकाम् ॥

॥ शक्ति — मातृस्वरूपं ॥

अनादि काल से मनुष्य ईश्वर की खोज में लगा है। यह सृष्टि क्या है? इसका मूल कारण क्या है? इसका रचयिता कौन है? — ऐसे प्रश्नों के उत्तर जानने की जिज्ञासा मनुष्य का स्वभाव है। इसी खोज से समय के साथ अनेक मत, आराधना की विधियाँ और उपासना की पद्धतियाँ विकसित हुईं।

सनातन धर्म ने "मातृदेवो भव" कहकर माता को सबसे पहले देवता का स्थान दिया है। जिस माँ ने हमें जन्म दिया, पाला-पोसा और जीवन दिया, उसके हम सदा ऋणी रहते हैं। यही मातृभाव जब विश्व के स्तर पर देखा जाता है, तो पूरे जगत को धारण और पोषित करने वाली प्रकृति भी हमारी माँ ही है।

यह जगत प्रकृति और पुरुष से बना है। प्रकृति के बिना मनुष्य तो क्या, कोई भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता। समस्त जीवों को अपने भीतर समेटे, उनका लालन-पालन करने वाली यह प्रकृति पूरी की पूरी शक्तिमयी है। यही शक्ति सृष्टि का आधार है, जीवन का प्राण है और जगत की निरन्तर गति का मूल कारण है।

श्रीविद्या परम्परा में श्रीललितासहस्रनाम माँ की स्तुति इस प्रकार करता है —

"अन्तर्मुखसमाराध्या बहिर्मुखसुदुर्लभा"

अर्थात् वे अन्तर्मुख साधकों की आराध्या हैं, पर बहिर्मुख लोगों के लिए अत्यन्त दुर्लभ। बाहरी संसार में कितना भी खोजें, वह पराशक्ति सहज नहीं मिलती; परन्तु जब हम भीतर मुड़कर अपनी चेतना को खोजते हैं, तब वे अनुभव में उतर आती हैं।

यह सारा विश्व शक्तिमय है। वही शक्ति हमारे भीतर बुद्धि, निद्रा, क्षुधा, चेतना, श्रद्धा, स्मृति, दया और मातृभाव — अनेक रूपों में प्रकट होती है। देवीमाहात्म्य की प्रसिद्ध स्तुति इसी सत्य का उद्घोष करती है:

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

हमारे भीतर और हमारे चारों ओर की समस्त सृष्टि में वही पराशक्ति व्याप्त है। योग-परम्परा में प्रत्येक जीव के भीतर सुप्त इसी शक्ति को कुण्डलिनी शक्ति कहा गया है। साधना द्वारा अन्तर्मुख होकर उस आन्तरिक शक्ति का अनुभव करना और व्यक्तिगत चेतना को परम चेतना की ओर ले जाना — यही आध्यात्मिक साधना का एक गहन रहस्य है।

सृष्टि में जगत को धारण, पोषण और संचालित करने वाली शक्ति, और प्रत्येक जीव में अन्तश्चेतना के रूप में प्रकाशित शक्ति — दोनों उसी जगन्माता की अभिव्यक्तियाँ हैं। बाहर प्रकृति के रूप में वही दर्शन देती हैं, भीतर चेतना बनकर वही प्रकाशित होती हैं, और प्राणी में शक्ति बनकर वही स्पन्दित होती हैं।

ऋग्वेद के देवीसूक्त में ऋषिका वाक् आम्भृणी अपनी अनुभूति इन शब्दों में प्रकट करती हैं —

"अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां
चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्"

(मैं ही सम्पूर्ण जगत की अधीश्वरी हूँ, समस्त ऐश्वर्य को एकत्र करने वाली हूँ, यज्ञ के योग्य देवताओं में प्रथम हूँ।) उसी मन्त्र में आगे वे कहती हैं कि देवताओं ने उन्हें अनेक स्थानों में प्रतिष्ठित किया है और वे अनेक रूपों में प्रवेश करती हैं।

अर्थात् — शक्ति एक है, उसकी अभिव्यक्तियाँ अनेक; तत्त्व एक है, रूप अनेक; चेतना एक है, उसके प्रकाश अनन्त। रूप चाहे कितने भी हों, उन सबमें प्रकाशित होने वाला परम तत्त्व एक ही है। उसी जगन्माता, उसी पराशक्ति को माँ के रूप में जानने, उनकी आराधना करने और उन्हें अपने भीतर अनुभव करने के लिए सनातन धर्म ने जो महान मार्ग दिया है, वही है — देवी उपासना।

॥ श्रीदुर्गासप्तशती — देवीमाहात्म्यं ॥

इसी पराशक्ति के वैभव को कथा, तत्त्व, मन्त्र और उपासना — चारों रूपों में हमारे सामने रखने वाला महान ग्रन्थ है श्रीदुर्गासप्तशती।

देवीमाहात्म्य और चण्डीपाठ के नाम से भी प्रसिद्ध यह ग्रन्थराज मार्कण्डेय पुराण का अंश है। पुराण के 81वें से 93वें अध्याय तक के ये तेरह अध्याय शाक्त परम्परा में विशिष्ट और पवित्र स्थान रखते हैं।

देवीमाहात्म्य की पृष्ठभूमि में जो कथा है, वह भी अत्यन्त सारगर्भित है।

शत्रुओं से राज्य हारकर वन में भटकते राजा सुरथ, और अपने ही परिजनों द्वारा ठुकराए गए, धन से वंचित समाधि नामक वैश्य — जीवन में सब कुछ खो चुके ये दोनों महर्षि मेधा के आश्रम में पहुँचते हैं।

बाहर से देखें तो उन्होंने अपनी सम्पत्ति खोई थी; पर उनका असली प्रश्न बाहरी हानि का नहीं, मन का था।

जिन्होंने हमें दुःख दिया, यह जानते हुए भी हम उनसे मोह क्यों नहीं छोड़ पाते? बुद्धि सत्य जानती है, फिर भी मन उसका अनुसरण क्यों नहीं करता? दुःख का कारण जान लेने पर भी मोह क्यों नहीं छूटता?

इन्हीं प्रश्नों के उत्तर में महर्षि मेधा उन्हें महामाया का तत्त्व समझाते हुए देवीमाहात्म्य का उपदेश देते हैं।

इसलिए देवीमाहात्म्य केवल देवताओं और असुरों के युद्धों की कथा नहीं है। यह एक आध्यात्मिक यात्रा है — जो मनुष्य के मन को व्यथित करने वाले मोह के प्रश्न से आरम्भ होती है, उस मोह की जड़ में स्थित महामाया का दर्शन कराती है, और अन्त में उसी देवी की शरण में जाने का मार्ग दिखाती है।

इस ग्रन्थ के तीन प्रमुख भाग हैं — प्रथम, मध्यम और उत्तम चरित्र, जिनकी अधिष्ठात्री देवियाँ क्रमशः महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती हैं। सात सौ मन्त्रों से युक्त होने के कारण ही यह "सप्तशती" कहलाता है।

मधु-कैटभ, महिषासुर, धूम्रलोचन, चण्ड-मुण्ड, रक्तबीज, शुम्भ-निशुम्भ — जैसे-जैसे असुर बदलते हैं, वैसे-वैसे देवी भी प्रसंग के अनुसार नए-नए रूप धारण करती हैं। आवश्यकता के अनुसार रूप बदलता है, पर उन सब रूपों में प्रकट होने वाली पराशक्ति एक ही है।

यहीं देवीमाहात्म्य का एक गूढ़ तत्त्व हमारे सामने प्रकट होता है।

वेद का पुरुषसूक्त कहता है —

“सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।”

(विराट् पुरुष के सहस्रों सिर, सहस्रों नेत्र और सहस्रों चरण हैं।) — इस प्रकार वह सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त विराट् पुरुष का वर्णन करता है; फिर “पुरुष एवेदं सर्वम्” कहकर घोषणा करता है कि यह सब कुछ वही पुरुष है।

दूसरी ओर देवीसूक्त यह उद्घोष करता है कि देवी अनेक स्थानों में प्रवेश कर अनेक प्रकार से प्रकट होती हैं।

वही वेदान्त-दृष्टि देवीमाहात्म्य में पराशक्ति के वैभव के रूप में खिल उठती है — रूप अनेक, शक्ति एक; नाम अनेक, आधार एक; अभिव्यक्तियाँ अनन्त, परम तत्त्व एक।

इसलिए इन तीन चरित्रों में हम देवी की महिमा, शक्ति के तत्त्व और धर्म की रक्षा के साथ-साथ यह सत्य भी देखते हैं कि एक ही पराशक्ति निरन्तर नए-नए रूप धारण करती हुई सृष्टि का धारण, पोषण और संचालन कर रही हैं।

इन युद्धों का एक आन्तरिक अर्थ भी है। आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो इन कथाओं के असुर हमारे भीतर के शत्रुओं — अज्ञान, अहंकार, मोह, भय और क्रोध — के प्रतीक हैं। जैसे देवी असुरों का संहार करती हैं, वैसे ही साधक को अज्ञान को ज्ञान से, मोह को विवेक से, भय को शरणागति से और अहंकार को भक्ति से जीतते हुए अन्तःकरण की शुद्धि की ओर बढ़ना है।

इसलिए देवीमाहात्म्य का युद्ध केवल बाहरी नहीं है; वह साधक के भीतर होने वाले रूपान्तरण का भी प्रतीक है।

शक्ति को परम देवतत्त्व के रूप में प्रतिपादित करने वाले ग्रन्थों में देवीमाहात्म्य का स्थान सर्वोपरि है। चण्डीपाठ, देवीपूजा, चण्डीहोम और नवरात्रि-उपासना जैसी अनेक शाक्त विधियों का यह आधार है।

परम्परा के अनुसार कलियुग में शीघ्र फल देने वाली उपासनाओं में सप्तशती-पाठ, चण्डीहोम और सुन्दरकाण्ड-पाठ प्रमुख माने गए हैं।

विशेष रूप से शारदीय नवरात्रि देवी-उपासना और सप्तशती-पाठ का सबसे पवित्र समय है। बाहर जगदम्बा की आराधना और भीतर अपनी दैवी शक्ति का जागरण — इसके लिए नवरात्रि एक विशेष साधना-काल है।

॥ इस संकलन के विषय में ॥

शारदीय नवरात्रि के अवसर पर यह पवित्र ग्रन्थ भक्तों को सहज रूप से उपलब्ध हो सके — इसी संकल्प से यह संकलन तैयार किया गया है।

देवीमाहात्म्य की अनेक मुद्रित प्रतियाँ और पाठ-पद्धतियाँ उपलब्ध हैं, फिर भी पाठ और उपासना-क्रम से जुड़ी सामग्री अलग-अलग स्थानों पर बिखरी मिलती है। इसलिए विभिन्न प्रतियों के पाठों का मिलान करके, पारायण के लिए आवश्यक सभी अंशों को यथासम्भव एक स्थान पर, शुद्ध रूप में भक्तों तक पहुँचाने का यह एक प्रयास है।

मुख्य सप्तशती-पाठ के साथ इस ग्रन्थ में आरम्भ में सप्तश्लोकी दुर्गा और श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र; पूर्वांग के रूप में देव्याः कवच, अर्गला स्तोत्र, कीलक स्तोत्र, वेदोक्त और तन्त्रोक्त रात्रिसूक्त, देव्यथर्वशीर्ष, नवार्णविधि और सप्तशतीन्यास; तथा उत्तरांग के रूप में वेदोक्त और तन्त्रोक्त देवीसूक्त, प्राधानिक, वैकृतिक और मूर्ति रहस्य तथा अपराध-क्षमापन स्तोत्र सम्मिलित हैं।

परम्परा के अनुसार सप्तशती को सात सौ मन्त्रों में क्रमांक सहित दिया गया है। साथ ही, चण्डीहोम करने वालों की सुविधा के लिए प्रत्येक अध्याय के अन्त में उस अध्याय की मन्त्र-संख्या और निवेदन-प्रार्थना भी दी गई है।

यहाँ मैं विनम्रतापूर्वक एक महत्त्वपूर्ण बात कहना चाहता हूँ। ग्रन्थ मार्ग दिखा सकता है, पर उस मार्ग पर चलाते गुरु ही हैं। आज आध्यात्मिक विषय इंटरनेट, यूट्यूब जैसे माध्यमों पर सहज ही मिल जाते हैं; परन्तु केवल वहाँ से मिली जानकारी के आधार पर मनमाने ढंग से मन्त्र, न्यास और उपासना करना उचित नहीं है।

इसीलिए इस ग्रन्थ में विशेष रूप से यह निर्देश दिया गया है कि नवार्णविधि, न्यास आदि पूर्वांग तथा सप्तशती की उपासना-विधि — ये सब गुरु के उपदेश के अनुसार और अपनी गुरु-परम्परा में निर्धारित पद्धति से ही की जाएँ।

जिन्हें पहले से गुरु-उपदेश प्राप्त है, वे अपने गुरु द्वारा बताई गई पद्धति का ही पालन करें। जो नए सिरे से आरम्भ करना चाहते हैं, उनके लिए श्रेयस्कर यही है कि वे सदाचार, निष्ठा, निःस्वार्थ सेवा-भाव, माँ के प्रति अटूट भक्ति और उपासना के अनुभव से सम्पन्न किसी सद्गुरु की शरण लें, और उनकी परम्परा से पाठ व उपासना का क्रम सीखकर उसका पालन करें।

सबसे बढ़कर — देवीमाहात्म्य को केवल सांसारिक कामनाओं की पूर्ति का साधन नहीं समझना चाहिए।

जगन्माता केवल भक्त की आवश्यकताएँ पूरी करने वाली माँ ही नहीं, स्वयं को जानने का मार्ग दिखाने वाली गुरुस्वरूपिणी भी हैं।

सांसारिक सुख चाहने वाले भक्त के लिए वे आश्रय हैं; संकट में पड़े लोगों के लिए अभय; साधक के लिए अन्तःकरण-शुद्धि का मार्ग; जिज्ञासु के लिए ज्ञान का द्वार; और मुमुक्षु के लिए परमार्थ-पथ का प्रकाश।

इसीलिए देवीमाहात्म्य एक श्रेष्ठ उपासना-मार्ग है — भुक्ति और मुक्ति दोनों देने वाली जगन्माता की शरण में जाकर हम सांसारिक कल्याण के साथ-साथ अन्तःकरण की शुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति पाते हुए परमार्थ के पथ पर आगे बढ़ सकते हैं।

समस्त प्राणियों में शक्ति बनकर वही हैं।
प्रकृति में विश्वरूप से वही विराजमान हैं।
हमारे हृदय में चेतना बनकर वही प्रकाशित हैं।

इस ग्रन्थ को हाथ में धारण करने से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है, इसमें निहित देवी-तत्त्व को हृदय में धारण करना। पाठ शब्दों से आरम्भ होकर भाव तक पहुँचे; भाव भक्ति में खिले; भक्ति साधना बने; और साधना अन्ततः आन्तरिक अनुभूति तक ले जाए।

जगन्माता श्रीदुर्गापरमेश्वरी से मेरी यही प्रार्थना है कि सभी भक्त इस पवित्र ग्रन्थ को खुले हृदय से अपनाएँ अपनी गुरु-परम्परा का अनुसरण करते हुए श्रद्धा और भक्ति से इसका पाठ करें, और माँ की कृपा पाकर कृतार्थ हों।

जगन्माता श्रीदुर्गापरमेश्वरी की कृपा सब पर सदा बनी रहे ॥

सर्वे जनाः सुखिनो भवन्तु ।
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥

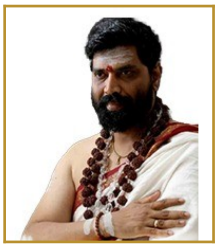

भवदीय,
श्री शीलप्प हरिप्रसाद शास्त्री
शारदीय नवरात्रि, 2026

॥ अथ सप्तश्लोकी दुर्गा ॥

शिव उवाच

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनि ।
कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः ॥

देव्युवाच

शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम् ।
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते ॥

ॐ अस्य श्री दुर्गा सप्तश्लोकी स्तोत्र मन्त्रस्य नारायण ऋषिः ।
अनुष्टुप् छन्दः ।
श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः ।
ॐ बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्लीं कीलकम् ।
श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥ 1 ॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥ 2 ॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ 3 ॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ 4 ॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ 5 ॥

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ 6 ॥

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ 7 ॥

॥ इति श्री सप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्णा ॥

॥ श्री दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती ॥ 1 ॥

ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी ।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥ 2 ॥

पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः ।
मनो बुद्धिरहङ्कारा चित्तरूपा चिता चितिः ॥ 3 ॥

सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी ।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः ॥ 4 ॥

शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा ।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ 5 ॥

अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती ।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी ॥ 6 ॥

अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी ।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता ॥ 7 ॥

ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा ।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥ 8 ॥

विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा ।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ॥ 9 ॥

निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी ।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ 10 ॥

सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी ।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥ 11 ॥

अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी ।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः ॥ 12 ॥

अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥ 13 ॥

अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥ 14 ॥

शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी ।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥ 15 ॥

य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम् ।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति ॥ 16 ॥

धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च ।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम् ॥ 17 ॥

कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम् ।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम् ॥ 18 ॥

तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवरैरपि ।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥ 19 ॥

गोरोचनालक्तककुङ्कुमेन सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण ।
विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो भवेत् सदा धारयते पुरारिः ॥ 20 ॥

भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते ।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम् ॥ 21 ॥

॥ इति श्री विश्वसारतन्त्रे दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ देव्याः कवचम् ॥

न्यासः

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः ।
अनुष्टुप् छन्दः । चामुण्डा देवता ।
अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम् ।
नवावरणो मन्त्रशक्तिः ।
दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम् ।
श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ 1 ॥

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् ।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥ 2 ॥

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥ 3 ॥

पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥ 4 ॥

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥ 5 ॥

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ॥ 6 ॥

न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसङ्कटे ।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि ॥ 7 ॥

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ॥ 8 ॥

प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥ 9 ॥

माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया ॥ 10 ॥

श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना ।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता ॥ 11 ॥

इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ॥ 12 ॥

दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः ।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥ 13 ॥

खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥ 14 ॥

दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च ।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै ॥ 15 ॥

नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥ 16 ॥

त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि ।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ॥ 17 ॥

दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी ।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद्वायव्यां मृगवाहिनी ॥ 18 ॥

उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी ।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा ॥ 19 ॥

एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥ 20 ॥

अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता ।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥ 21 ॥

मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद्यशस्विनी ।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ॥ 22 ॥

शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी ।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शाङ्करी ॥ 23 ॥

नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥ 24 ॥

दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका ।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥ 25 ॥

कामाक्षी चिबुकं रक्षेद्वाचं मे सर्वमङ्गला ।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ॥ 26 ॥

नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी ।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद्बाहू मे वज्रधारिणी ॥ 27 ॥

हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च ।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ॥ 28 ॥

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोकविनाशिनी ।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥ 29 ॥

नाभौ च कामिनी रक्षेद्गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी ॥ 30 ॥

कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी ।
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥ 31 ॥

गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी ।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी ॥ 32 ॥

नखान् दंष्ट्रकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ।
रोमकूपेषु कौमारी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥ 33 ॥

रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥ 34 ॥

पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसन्धिषु ॥ 35 ॥

शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ।
अहङ्कारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥ 36 ॥

प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् ।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना ॥ 37 ॥

रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥ 38 ॥

आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी ।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥ 39 ॥

गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके ।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ॥ 40 ॥

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा ।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ॥ 41 ॥

रक्षाहीनं तु यत् स्थानं वर्जितं कवचेन तु ।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ॥ 42 ॥

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥ 43 ॥

तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः ।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ 44 ॥

परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ।
निर्भयो जायते मर्त्यः सङ्ग्रामेष्वपराजितः ॥ 45 ॥

त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ।
इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ॥ 46 ॥

यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ।
दैवीकला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ॥ 47 ॥

जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ।
नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः ॥ 48 ॥

स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चैव यद्विषम् ।
अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ॥ 49 ॥

भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ।
सहजाः कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ॥ 50 ॥

अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ।
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ॥ 51 ॥

ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ।
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ॥ 52 ॥

मानोन्नतिर्भवेद्राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम् ।
यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले ॥ 53 ॥

जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ।
यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ॥ 54 ॥

तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी ।
देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ॥ 55 ॥

प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ।
लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ॥ 56 ॥

॥ इति वाराहपुराणे हरिहरब्रह्मविरचितं देव्याः कवचं सम्पूर्णम् ॥

देवी माहात्म्यं — अर्गला स्तोत्रम्

विनियोगः

अस्य श्री अर्गला स्तोत्र मन्त्रस्य विष्णुः ऋषिः ।
अनुष्टुप् छन्दः । श्री महालक्ष्मीर्देवता ।
मन्त्रोदिता देव्यो बीजम् । नवार्णो मन्त्रशक्तिः ।
श्री सप्तशती मन्त्रस्तत्त्वं ।
श्री जगदम्बा प्रीत्यर्थे सप्तशती पाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ॥

ध्यानं

ॐ बन्धूक कुसुमाभासां पञ्चमुण्डाधिवासिनीम् ।
स्फुरच्चन्द्रकलारत्न मुकुटां मुण्डमालिनीम् ॥

त्रिनेत्रां रक्तवसनां पीनोन्नत घटस्तनीम् ।
पुस्तकं चाक्षमालां च वरं चाभयकं क्रमात् ॥

दधतीं संस्मरेन्नित्यमुत्तराम्नायमानिताम् ॥

अथवा

या चण्डी मधुकैटभादि दैत्यदलनी या माहिषोन्मूलिनी ।
या धूम्रेक्षण चण्डमुण्डमथनी या रक्तबीजाशनी ॥

शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलनी या सिद्धिदात्री परा ।
सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥ 1 ॥

जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि ।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तुते ॥ 2 ॥

मधुकैटभविद्रावि विधातृवरदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 3 ॥

महिषासुरनिर्नाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 4 ॥

रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 5 ॥

शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 6 ॥

वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 7 ॥

अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 8 ॥

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चापर्णे दुरितापहे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 9 ॥

स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 10 ॥

चण्डिके सततं युद्धे जयन्ति पापनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 11 ॥

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 12 ॥

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 13 ॥

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 14 ॥

सुरासुरशिरोरत्न निघृष्टचरणेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 15 ॥

विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 16 ॥

प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 17 ॥

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र संस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 18 ॥

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 19 ॥

हिमाचलसुतानाथ संस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 20 ॥

इन्द्राणीपतिसद्भाव पूजिते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 21 ॥

देवि प्रचण्डदोर्दण्ड दैत्यदर्पविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 22 ॥

देवि भक्तजनोद्दाम दत्तानन्दोदयेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 23 ॥

भार्यां मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ 24 ॥

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।
स तु सप्तशतीसङ्ख्या वरमाप्नोति सम्पदाम् ॥ 25 ॥

॥ इति देव्या अर्गला स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

देवी माहात्म्यं — कीलक स्तोत्रम्

विनियोगः

अस्य श्री कीलक स्तोत्र महामन्त्रस्य ।
शिव ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः ।
महासरस्वती देवता ।
मन्त्रोदित देव्यो बीजम् ।
नवार्णो मन्त्रशक्तिः ।
श्री सप्तशती मन्त्रस्तत्त्वम् ।
श्री जगदम्बा प्रीत्यर्थे सप्तशती पाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ।
श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे ॥ 1 ॥

सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामपि कीलकम् ।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥ 2 ॥

सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनि कर्माणि सकलान्यपि ।
एतेन स्तुवतां देवीं स्तोत्रवृन्देन भक्तितः ॥ 3 ॥

न मन्त्रो नौषधं तस्य न किञ्चिदपि विद्यते ।
विना जाप्यं न सिद्ध्येत्तु सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥ 4 ॥

समग्राण्यपि सेत्स्यन्ति लोकशङ्कामिमां हरः ।
कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम् ॥ 5 ॥

स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुह्यं चकार सः ।
समाप्नोति स पुण्येन तां यथावन्निमन्त्रणाम् ॥ 6 ॥

सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेव न संशयः ।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥ 7 ॥

ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति ।
इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ 8 ॥

यो निष्कीलां विधायैनां चण्डीं जपति नित्यशः ।
स सिद्धः स गणः सोऽथ गन्धर्वो जायते ध्रुवम् ॥ 9 ॥

न चैवापाटवं तस्य भयं क्वापि न जायते ।
नापमृत्युवशं याति मृते च मोक्षमाप्नुयात् ॥ 10 ॥

ज्ञात्वा प्रारम्भ्य कुर्वीत ह्यकुर्वाणो विनश्यति ।
ततो ज्ञात्वैव सम्पूर्णमिदं प्रारम्भ्यते बुधैः ॥ 11 ॥

सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद्दृश्यते ललनाजने ।
तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जप्यमिदं शुभम् ॥ 12 ॥

शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः ।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारम्भ्यमेव तत् ॥ 13 ॥

ऐश्वर्यं तत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यमेव च ।
शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः ॥ 14 ॥

चण्डिकां हृदयेनापि यः स्मरेत् सततं नरः ।
हृद्यं काममवाप्नोति हृदि देवी सदा वसेत् ॥ 15 ॥

अग्रतोऽमुं महादेवकृतं कीलकवारणम् ।
निष्कीलं च तथा कृत्वा पठितव्यं समाहितैः ॥ 16 ॥

॥ इति श्री देव्याः कीलक स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ वेदोक्तं रात्रिसूक्तम् — सस्वरम् ॥

॥ ऋग्वेदः — दशममण्डलम् — सूक्तम् 127 ॥

ॐ रात्री व्यंख्यदायती पुंरुत्रा देव्यं(अ)1क्षभिंः ।
विश्वा अधि श्रियोंऽधित ॥ 1 ॥

ओर्वंप्रा अमंर्त्या निवतों देव्युं(उ)द्वतंः ।
ज्योतिंषा बाधते तमंः ॥ 2 ॥

निरु स्वसांरमस्कृतोषसं देव्यांयती ।
अपेदुं हासते तमंः ॥ 3 ॥

सा नों अद्य यस्यां वयं नि ते यामन्नविंक्ष्महि ।
वृक्षे न वसतिं वयंः ॥ 4 ॥

नि ग्रामांसो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणंः ।
नि श्येनासंश्चिदर्थिनंः ॥ 5 ॥

यावयां वृक्य(अ०)1 वृकं यवयं स्तेनमूंर्म्ये ।
अथां नः सुतरां भव ॥ 6 ॥

उपं मा पेपिंशत्तमंः कृष्णं व्यंक्तमस्थित ।
उषं ऋणेवं यातय ॥ 7 ॥

उपं ते गा इवाकंरं वृणीष्व दुंहितर्दिवः ।
रात्रि स्तोमं न जिग्युषें ॥ 8 ॥

॥ इति वेदोक्तं रात्रिसूक्तम् ॥

॥ अथ तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम् ॥

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ 1 ॥

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥ 2 ॥

अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥ 3 ॥

त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ 4 ॥

विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ 5 ॥

महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ॥ 6 ॥

प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥ 7 ॥

त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ 8 ॥

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ 9 ॥

सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ 10 ॥

यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ 11 ॥

यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ 12 ॥

विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥ 13 ॥

सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥ 14 ॥

प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥ 15 ॥

॥ इति रात्रिसूक्तम् ॥

॥ देव्यथर्वशीर्षम् ॥

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः ।
कासि त्वं महादेवीति ॥ 1 ॥

साब्रवीत् —
अहं ब्रह्मस्वरूपिणी ।
मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत् ।
शून्यं चाशून्यं च ॥ 2 ॥

अहमानन्दानानन्दौ ।
अहं विज्ञानाविज्ञाने ।
अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये ।
अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि ।
अहमखिलं जगत् ॥ 3 ॥

वेदोऽहमवेदोऽहम् ।
विद्याहमविद्याहम् ।
अजाहमनजाहम् ।
अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम् ॥ 4 ॥

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि ।
अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः ।
अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि ।
अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ ॥ 5 ॥

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि ।
अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि ॥ 6 ॥

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते
सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते ।
अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां
चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ॥ 7 ॥

अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन् ।
मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे ।
य एवं वेद ।
स दैवीं सम्पदमाप्नोति ॥ 8 ॥

ते देवा अब्रुवन् —
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ 9 ॥

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं
वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहे
असुरान्नाशयित्र्यै ते नमः ॥ 10 ॥

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां
विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना
धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु ॥ 11 ॥

कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् ।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम् ॥ 12 ॥

महालक्ष्म्यै च विद्महे
सर्वशक्त्यै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ 13 ॥

अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष
या दुहिता तव ।
तां देवा अन्वजायन्त
भद्रा अमृतबन्धवः ॥ 14 ॥

कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गु
हा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः ।
पुनर्गुहा सकला मायया च
पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम् ॥ 15 ॥

एषात्मशक्तिः ।
एषा विश्वमोहिनी ।
पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा ।
एषा श्रीमहाविद्या ।
य एवं वेद स शोकं तरति ॥ 16 ॥

नमस्ते अस्तु भगवति ।
मातरस्मान् पाहि सर्वतः ॥ 17 ॥

सैषाष्टौ वसवः ।
सैषैकादश रुद्राः ।
सैषा द्वादशादित्याः ।
सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च ।
सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः ।
सैषा सत्त्वरजस्तमांसि ।
सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी ।
सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः ।
सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि ।
कलाकाष्ठादिकालरूपिणी ।
तामहं प्रणौमि नित्यम् ॥ 18 ॥

पापापहारिणीं देवीं
भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम् ।
अनन्तां विजयां शुद्धां
शरण्यां शिवदां शिवाम् ॥ 19 ॥

वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम् ।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् ॥ 20 ॥

एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः ।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः ॥ 21 ॥

वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम् ।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः ।
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक्ततः ।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः ॥ 22 ॥

हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां
प्रातःसूर्यसमप्रभाम् ।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां
वरदाभयहस्तकाम् ॥

त्रिनेत्रां रक्तवसनां
भक्तकामदुघां भजे ॥

नमामि त्वां महादेवीं
महाभयविनाशिनीम् ।
महादुर्गप्रशमनीं
महाकारुण्यरूपिणीम् ॥ 23 ॥

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति
तस्मादुच्यते अज्ञेया ।
यस्या अन्तो न लभ्यते
तस्मादुच्यते अनन्ता ।
यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते
तस्मादुच्यते अलक्ष्या ।
यस्या जननं नोपलभ्यते
तस्मादुच्यते अजा ।
एकैव सर्वत्र वर्तते
तस्मादुच्यते एका ।
एकैव विश्वरूपिणी
तस्मादुच्यते नैका ।
अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति ॥ 24 ॥

मन्त्राणां मातृका देवी
शब्दानां ज्ञानरूपिणी ।
ज्ञानानां चिन्मयातीता
शून्यानां शून्यसाक्षिणी ।
यस्याः परतरं नास्ति
सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ 25 ॥

तां दुर्गां दुर्गमां देवीं
दुराचारविघातिनीम् ।
नमामि भवभीतोऽहं
संसारार्णवतारिणीम् ॥ 26 ॥

फलश्रुतिः

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति ।
इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति ।
शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ।
दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते ।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ॥

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति ।
प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति ।
सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति ।
निशीथे तुरीयसन्ध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति ।
नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति ।
प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति ।
भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति ।
स महामृत्युं तरति ॥

॥ इत्युपनिषत् ॥

॥ अथ नवार्णविधिः ॥

श्रीगणपतिर्जयति ।

ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि ।
श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः ।
ऐं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्लीं कीलकम् ।
श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

सूचना: श्रीदेवीमाहात्म्य सप्तशती के पारायण से पूर्व नवार्णविधि, न्यास आदि पूर्वांगों का अनुष्ठान अपने गुरु के उपदेशानुसार, गुरुपरम्परा की पद्धति के अनुसार करना चाहिए ।

तदनन्तर श्रीदेवीमाहात्म्य सप्तशती का पारायण आरम्भ करना चाहिए ॥

॥ सप्तशतीन्यासः ॥

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥
अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिस्वनेन च ॥
तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥
मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥
अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥
कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥
करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

अङ्गन्यासः

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ — **हृदयाय नमः ।**

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिस्वनेन च ॥ — **शिरसे स्वाहा ।**

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ — **शिखायै वषट् ।**

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ — **कवचाय हुम् ।**

ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ — **नेत्रत्रयाय वौषट् ।**

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ — **अस्त्राय फट् ॥**

॥ अथ श्रीदुर्गासप्तशती ॥

॥ प्रथम चरित्रम् ॥

॥ मधुकैटभवधो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥

अस्य श्रीप्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः ।
महाकाली देवता । गायत्री छन्दः ।
नन्दा शक्तिः । रक्तदन्तिका बीजम् । अग्निस्तत्त्वम् ।
ऋग्वेदः स्वरूपम् ।
श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे प्रथमचरित्रजपे विनियोगः ॥

ध्यानं
खड्गं चक्र गदेषु चाप परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः ।
शङ्खं सन्दधतीं करै स्त्रिनयनां सर्वाङ्ग भूषावृताम् ॥

नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां ।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥

॥ प्रथमोऽध्यायः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै
ॐ ऐं मार्कण्डेय उवाच॥1॥

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः ।
निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम ॥ 2 ॥

महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः ।
स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः ॥ 3 ॥

स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः ।
सुरथो नाम राजाऽभूत् समस्ते क्षितिमण्डले ॥ 4 ॥

तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान् ।
बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिन स्तदा ॥ 5 ॥

तस्य तैरभवद् युद्धं अतिप्रबलदण्डिनः ।
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर् जितः ॥ 6 ॥

ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत् ।
आक्रान्तः स महाभाग स्तैस्तदा प्रबलारिभिः ॥ 7 ॥

अमात्यैर् बलिभिर् दुष्टैर् दुर्बलस्य दुरात्मभिः ।
कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥ 8 ॥

ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः ।
एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनं ॥ 9 ॥

स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः ।
प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितं ॥ 10 ॥

तस्थौ कञ्चित् स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः ।
इतश्चेतश्च विचरं स्तस्मिन् मुनिवराश्रमे ॥ 11 ॥

सोऽचिन्तयत् तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः ॥ 12 ॥

मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मयाहीनं पुरं हि तत् ।
मद्भृत्यै स्तैरसद्वृत्तैर् धर्मतः पाल्यते न वा ॥ 13 ॥

न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः ।
मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते ॥ 14 ॥

ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः ।
अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृतां ॥ 15 ॥

असम्यग्व्ययशीलै स्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययं ।
सञ्चितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति ॥ 16 ॥

एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः ।
तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः ॥ 17 ॥

स पृष्ट स्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः ।
सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे ॥ 18 ॥

इत्याकर्ण्य वच स्तस्य भूपतेः प्रणयोदितं ।
प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपं ॥ 19 ॥

वैश्य उवाच ॥ 20 ॥

समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले ॥ 21 ॥

पुत्रदारैर् निरस्तश्च धनलोभाद् असाधुभिः ।
विहीनश्च धनैर् दारैः पुत्रैरादाय मे धनं ॥ 22 ॥

वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः ।
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकां ॥ 23 ॥

प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः ।
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतं ॥ 24 ॥

कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ता किं नु मे सुताः ॥ 25 ॥

राजोवाच ॥ 26 ॥

यैर् निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर् धनैः ॥ 27 ॥

तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसं ॥ 28 ॥

वैश्य उवाच ॥ 29 ॥

एवमेतद् यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः ॥ 30 ॥

किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः ।
यैः सन्त्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर् निराकृतः ॥ 31 ॥

पतिः स्वजनहार्दं च हार्दि तेष्वेव मे मनः ।
किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥ 32 ॥

यत् प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु ।
तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते ॥ 33 ॥

करोमि किं यन्न मन स्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरं ॥ 34 ॥

मार्कण्डेय उवाच ॥ 35 ॥

तत स्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ ॥ 36 ॥

समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः ।
कृत्वा तु तौ यथान्याय्यं यथार्हं तेन संविदं ॥ 37 ॥

उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर् वैश्यपार्थिवौ ॥ 38 ॥

राजोवाच ॥ 39 ॥

भगवं स्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥ 40 ॥

दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना ।
ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि ॥ 41 ॥

जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन् मुनिसत्तम ।
अयं च निकृतः पुत्रैर् दारैर् भृत्यै स्तथोज्झितः ॥ 42 ॥

स्वजनेन च सन्त्यक्त स्तेषु हार्दी तथाप्यति ।
एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ ॥ 43 ॥

दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ ।
तत् केनैतन् महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥ 44 ॥

ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥ 45 ॥

ऋषिरुवाच ॥ 46 ॥

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर् विषयगोचरे ॥ 47 ॥

विषयश्च महाभाग यान्ति चैवं पृथक् पृथक् ।
दिवान्धाः प्राणिनः केचिद् रात्रावन्धा स्तथापरे ॥ 48 ॥

केचिद् दिवा तथा रात्रौ प्राणिन स्तुल्यदृष्टयः ।
ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं तु ते न हि केवलं ॥ 49 ॥

यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः ।
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणां ॥ 50 ॥

मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत् तथोभयोः ।
ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतगाञ्छाबचञ्चुषु ॥ 51 ॥

कणमोक्षादृतान् मोहात् पीड्यमानानपि क्षुधा ।
मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति ॥ 52 ॥

लोभात् प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं न पश्यसि ।
तथापि ममतावर्ते मोहगर्ते निपातिताः ॥ 53 ॥

महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा ।
तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥ 54 ॥

महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत् ।
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥ 55 ॥

बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ।
तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरं ॥ 56 ॥

सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ।
सा विद्या परमा मुक्तेर् हेतुभूता सनातनी ॥ 57 ॥

संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥ 58 ॥

राजोवाच ॥ 59 ॥

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान् ॥ 60 ॥

ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज ।
यत् प्रभावा च सा देवी यत् स्वरूपा यदुद्भवा ॥ 61 ॥

तत् सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर ॥ 62 ॥

ऋषिरुवाच ॥ 63 ॥

नित्यैव सा जगन्मूर्ति स्तया सर्वमिदं ततं ॥ 64 ॥

तथापि तत् समुत्पत्तिर् बहुधा श्रूयतां मम ।
देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा ॥ 65 ॥

उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते ।
योगनिद्रां यदा विष्णुर् जगत्येकार्णवीकृते ॥ 66 ॥

आस्तीर्य शेषमभजत् कल्पान्ते भगवान् प्रभुः ।
तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ ॥ 67 ॥

विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ ।
स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ॥ 68 ॥

दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनं ।
तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयः स्थितः ॥ 69 ॥

विबोधनार्थाय हरेर् हरिनेत्रकृतालयां ।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीं ॥ 70 ॥

निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ 71 ॥

ब्रह्मोवाच ॥ 72 ॥

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥ 73 ॥

सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ।
अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ॥ 74 ॥

त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ।
त्वयैतद् धार्यते विश्वं त्वयैतत् सृज्यते जगत् ॥ 75 ॥

त्वयैतत् पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥ 76 ॥

तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥ 77 ॥

महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ।
प्रकृति स्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ 78 ॥

कालरात्रिर् महारात्रिर् मोहरात्रिश्च दारुणा ।
त्वं श्री स्त्वमीश्वरी त्वं ह्री स्त्वं बुद्धिर् बोधलक्षणा ॥ 79 ॥

लज्जा पुष्टि स्तथा तुष्टि स्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ 80 ॥

शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ।
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्य स्त्वतिसुन्दरी ॥ 81 ॥

परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ।
यच्च किञ्चित् क्वचिद् वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥ 82 ॥

तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ।
यया त्वया जगत् स्रष्टा जगत् पात्यत्ति यो जगत् ॥ 83 ॥

सोऽपि निद्रावशं नीतः क स्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ।
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥ 84 ॥

कारिता स्ते यतोऽत स्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर् देवि संस्तुता ॥ 85 ॥

मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥ 86 ॥

बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥ 87 ॥

ऋषिरुवाच ॥ 88 ॥

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥ 89 ॥

विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ ।
नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्य स्तथोरसः ॥ 90 ॥

निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः ।
उत्तस्थौ च जगन्नाथ स्तया मुक्तो जनार्दनः ॥ 91 ॥

एकार्णवेऽहिशयनात् ततः स ददृशे च तौ ।
मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ ॥ 92 ॥

क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ ।
समुत्थाय तत स्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः ॥ 93 ॥

पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः ।
तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ॥ 94 ॥

उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवं ॥ 95 ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ 96 ॥

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ॥ 97 ॥

किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम ॥ 98 ॥

ऋषिरुवाच ॥ 99 ॥

वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत् ।
विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः ॥ 100 ॥

आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥ 101 ॥

ऋषिरुवाच ॥ 102 ॥

तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता ।
कृत्वा चक्रेण वै छिन्ने जघने शिरसी तयोः ॥ 103 ॥

एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयं ।
प्रभावमस्या देव्या स्तु भूयः शृणु वदामि ते ॥ 104 ॥

॥ अध्यायसमाप्तिः ॥

॥ जय जय श्री स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मधुकैटभवधो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥

आहुति

ॐ एं साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै एं बीजाधिष्ठायै महाकालिकायै महा आहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

॥ चण्डीहोम निवेदन ॥

उवाच-पद मन्त्र *14,* अर्धश्लोक मन्त्र *24,* पूर्णश्लोक मन्त्र *66* — कुल *104*

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ॐ साङ्गायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै
वाग्भवबीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै
नागवल्लीदलद्वययुतं कुङ्कुमाक्षतपुष्पैरभ्यर्चितं कपित्थफलं
निवेदन समर्पयामि ॐ नमश्चण्डिकायै देव्यै

(दो पान के पत्तों, कुंकुम, अक्षत और पुष्पों से अर्चित कैथ (कपित्थ) फल अर्पित करें)

॥ मध्यम चरित्रम् ॥

॥ महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥

अस्य सप्तशतीमध्यमचरित्रस्य विष्णुर् ऋषिः ।
उष्णिक् छन्दः । श्रीमहालक्ष्मी देवता ।
शाकम्भरी शक्तिः । दुर्गा बीजम् । वायु स्तत्त्वम् ।
यजुर्वेदः स्वरूपम् ।
श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थे मध्यमचरित्रजपे विनियोगः ॥

॥ ध्यानं ॥

ॐ अक्षस्रक् परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां ।
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ॥
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभां ।
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच ॥ 1 ॥

देवासुरमभूद् युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा ।
महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे ॥ 2 ॥

तत्रासुरैर् महावीर्यैर् देवसैन्यं पराजितं ।
जित्वा च सकलान् देवान् इन्द्रोऽभून् महिषासुरः ॥ 3 ॥

ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिं ।
पुरस्कृत्य गता स्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ ॥ 4 ॥

यथावृत्तं तयो स्तद्वन् महिषासुरचेष्टितं ।
त्रिदशाः कथयामासुर् देवाभिभवविस्तरं ॥ 5 ॥

सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च ।
अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति ॥ 6 ॥

स्वर्गान् निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि ।
विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥ 7 ॥

एतद् वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितं ।
शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वध स्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ 8 ॥

इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः ।
चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ ॥ 9 ॥

ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात् ततः ।
निश्चक्राम महत् तेजो ब्रह्मणः शङ्करस्य च ॥ 10 ॥

अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः ।
निर्गतं सुमहत् तेज स्तच्चैक्यं समगच्छत ॥ 11 ॥

अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतं ।
ददृशु स्ते सुरा स्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरं ॥ 12 ॥

अतुलं तत्र तत् तेजः सर्वदेवशरीरजं ।
एकस्थं तदभून् नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा ॥ 13 ॥

यदभूच्छाम्भवं तेज स्तेनाजायत तन्मुखं ।
याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा ॥ 14 ॥

सौम्येन स्तनयोर् युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत् ।
वारुणेन च जङ्घोरू नितम्ब स्तेजसा भुवः ॥ 15 ॥

ब्रह्मण स्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा ।
वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥ 16 ॥

तस्या स्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा ।
नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा ॥ 17 ॥

भ्रुवौ च सन्ध्ययो स्तेजः श्रवणावनिलस्य च ।
अन्येषां चैव देवानां सम्भव स्तेजसां शिव ॥ 18 ॥

ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवां ।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः ॥ 19 ॥

शूलं शूलाद् विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक् ।
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाट्य स्वचक्रतः ॥ 20 ॥

शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः ।
मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी ॥ 21 ॥

वज्रमिन्द्रः समुत्पाट्य कुलिशादमराधिपः ।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात् ॥ 22 ॥

कालदण्डाद् यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर् ददौ ।
प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलं ॥ 23 ॥

समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः ।
कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलं ॥ 24 ॥

क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे ।
चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥ 25 ॥

अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु ।
नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमं ॥ 26 ॥

अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च ।
विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलं ॥ 27 ॥

अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाऽभेद्यं च दंशनं ।
अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापरां ॥ 28 ॥

अददज् जलधि स्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनं ।
हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥ 29 ॥

ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः ।
शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितं ॥ 30 ॥

नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमां ।
अन्यैरपि सुरैर् देवी भूषणैरायुधै स्तथा ॥ 31 ॥

सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर् मुहुः ।
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥ 32 ॥

अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत् ।
चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥ 33 ॥

चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः ।
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीं ॥ 34 ॥

तुष्टुवुर् मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः ।
दृष्ट्वा समस्तं सङ्क्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥ 35 ॥

सन्नद्धाखिलसैन्या स्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः ।
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥ 36 ॥

अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर् वृतः ।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा ॥ 37 ॥

पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बरां ।
क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन तां ॥ 38 ॥

दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थितां ।
ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषां ॥ 39 ॥

शस्त्रास्त्रैर् बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरं ।
महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥ 40 ॥

युयुधे चमरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः ।
रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः ॥ 41 ॥

अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः ।
पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः ॥ 42 ॥

अयुतानां शतैः षड्भिर् भाष्कलो युयुधे रणे ।
गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः ॥ 43 ॥

वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत ।
बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः ॥ 44 ॥

युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः ।
अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर् वृताः ॥ 45 ॥

युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः ।
कोटिकोटिसहस्रै स्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥ 46 ॥

हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून् महिषासुरः ।
तोमरैर् भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर् मुसलै स्तथा ॥ 47 ॥

युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः ।
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित् पाशां स्तथापरे ॥ 48 ॥

देवीं खड्गप्रहारै स्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः ।
सापि देवी तत स्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥ 49 ॥

लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी ।
अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः ॥ 50 ॥

मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी ।
सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी ॥ 51 ॥

चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः ।
निःश्वासान् मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका ॥ 52 ॥

त एव सद्यःसम्भूता गणाः शतसहस्रशः ।
युयुधु स्ते परशुभिर् भिन्दिपालासिपट्टिशैः ॥ 53 ॥

नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः ।
अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खां स्तथापरे ॥ 54 ॥

मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे ।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः ॥ 55 ॥

खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान् ।
पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान् ॥ 56 ॥

असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत् ।
केचिद् द्विधाकृता स्तीक्ष्णैः खड्गपातै स्तथापरे ॥ 57 ॥

विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते ।
वेमुश्च केचिद् रुधिरं मुसलेन भृशं हताः ॥ 58 ॥

केचिन् निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि ।
निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद् रणाजिरे ॥ 59 ॥

शल्यानुकारिणः प्राणान् मुमुचु स्त्रिदशार्दनाः ।
केषाञ्चिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवा स्तथापरे ॥ 60 ॥

शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः ।
विच्छिन्नजङ्घा स्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ॥ 61 ॥

एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद् देव्या द्विधाकृताः ।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ॥ 62 ॥

कबन्धा युयुधुर् देव्या गृहीतपरमायुधाः ।
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥ 63 ॥

कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः ।
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥ 64 ॥

पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा ।
अगम्या साभवत् तत्र यत्राभूत् स महारणः ॥ 65 ॥

शोणितौघा महानद्यः सद्य स्तत्र विसुस्रुवुः ।
मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनां ॥ 66 ॥

क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका ।
निन्ये क्षयं यथा वह्नि स्तृणदारुमहाचयं ॥ 67 ॥

स च सिंहो महानादमुत्सृजन् धुतकेसरः ।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥ 68 ॥

देव्या गणैश्च तै स्तत्र कृतं युद्धं तथासुरैः ।
यथैषां तुष्टुवुर् देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॥ 69 ॥

॥ द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥

॥ जय जय श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ आहुति ॥

ॐ ह्रीं साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै अष्टाविंशतिवर्णात्मिकायै लक्ष्मीबीजाधिष्ठायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

॥ चण्डीहोम निवेदन ॥

उवाच-पद मन्त्र *1*, श्लोक मन्त्र *68* — कुल *69*
पूर्व मन्त्र *104* + इस अध्याय के मन्त्र *69 = 173*

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ॐ साङ्गायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै
लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्यै श्रीमहालक्ष्म्यै
सघृतं नारिकेलफलं निवेदन समर्पयामि ॐ नमश्चण्डिकायै

(गाय के घी के साथ नारियल अर्पित करें)

॥ महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ ध्यानं ॥

ॐ उद्यद्भानुसहस्रकान्तिं अरुणक्षौमां शिरोमालिकां ।
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम् ॥
हस्ताब्जैर् दधतीं त्रिनेत्रवक्त्रारविन्दश्रियं ।
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥

ॐ ऋषिरुवाच ॥ 1 ॥

निहन्यमानं तत् सैन्यमवलोक्य महासुरः ।
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद् ध्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् ॥ 2 ॥

स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः ।
यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः ॥ 3 ॥

तस्य छित्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान् ।
जघान तुरगान् बाणैर् यन्तारं चैव वाजिनां ॥ 4 ॥

चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रृतं ।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः ॥ 5 ॥

स छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः ।
अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः ॥ 6 ॥

सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि ।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥ 7 ॥

तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन ।
ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः ॥ 8 ॥

चिक्षेप च तत स्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः ।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् ॥ 9 ॥

दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत ।
तच्छूलं शतधा तेन नीतं शूलं स च महासुरः ॥ 10 ॥

हते तस्मिन् महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ ।
आजगाम गजारूढश्चामर स्त्रिदशार्दनः ॥ 11 ॥

सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्या स्तामम्बिका द्रुतं ।
हुङ्काराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभां ॥ 12 ॥

भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः ।
चिक्षेप चामरः शूलं बाणै स्तदपि साच्छिनत् ॥ 13 ॥

ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः ।
बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चै स्त्रिदशारिणा ॥ 14 ॥

युध्यमानौ तत स्तौ तु तस्मान् नागान् महीं गतौ ।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ॥ 15 ॥

ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा ।
करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक् कृतं ॥ 16 ॥

उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर् हतः ।
दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः ॥ 17 ॥

देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतं ।
भाष्कलं भिन्दिपालेन बाणै स्ताम्रं तथान्धकं ॥ 18 ॥

उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुं ।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥ 19 ॥

बिडालस्यासिना कायात् पातयामास वै शिरः ।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर् निन्ये यमक्षयं ॥ 20 ॥

एवं सङ्क्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः ।
माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान् ॥ 21 ॥

कांश्चित् तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपै स्तथापरान् ।
लाङ्गूलताडितांश्चान्यान् शृङ्गाभ्यां च विदारितान् ॥ 22 ॥

वेगेन कांश्चिदपरान् नादेन भ्रमणेन च ।
निःश्वासपवनेनान्यान् पातयामास भूतले ॥ 23 ॥

निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः ।
सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ॥ 24 ॥

सोऽपि कोपान् महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः ।
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च ॥ 25 ॥

वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत ।
लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ॥ 26 ॥

धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर् घनाः ।
श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर् नभसोऽचलाः ॥ 27 ॥

इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरं ।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाऽकरोत् ॥ 28 ॥

सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरं ।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे ॥ 29 ॥

ततः सिंहोऽभवत् सद्यो यावत् तस्याम्बिका शिरः ।
छिनत्ति तावत् पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत ॥ 30 ॥

तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः ।
तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून् महागजः ॥ 31 ॥

करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च ।
कर्षत स्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत ॥ 32 ॥

ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः ।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरं ॥ 33 ॥

ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमं ।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना ॥ 34 ॥

ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः ।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् ॥ 35 ॥

सा च तान् प्रहितां स्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः ।
उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरं ॥ 36 ॥

देव्युवाच ॥ 37 ॥

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत् पिबाम्यहं ।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥ 38॥

ऋषिरुवाच ॥ 39 ॥

एवमुक्त्वा समुत्पत्य सारूढा तं महासुरं ।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ॥ 40 ॥

ततः सोऽपि पदाक्रान्त स्तया निजमुखात् ततः ।
अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः ॥ 41 ॥

अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः ।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ॥ 42 ॥

ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत् ।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः ॥ 43 ॥

तुष्टुवु स्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर् महर्षिभिः ।
जगुर् गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ 44 ॥

॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ आहुति ॥

ह्रीं जयन्ती साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्रीमहालक्ष्म्यै लक्ष्मीबीजाधिष्ठायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

॥ चण्डीहोम निवेदन ॥

उवाच-पद मन्त्र *3*, श्लोक मन्त्र *41* — कुल *44*
पूर्व मन्त्र *173* + इस अध्याय के मन्त्र *44* = *217*

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ॐ साङ्गायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै
अष्टाविंशतिवर्णात्मिकायै श्रीमहालक्ष्म्यै
घृतमधुपुष्पाणि निवेदन समर्पयामि ॐ नमश्चण्डिकायै

(गाय का घी, मधु और पुष्प अर्पित करें)

॥ शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ ध्यानं ॥

कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां ।
शङ्खचक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्रम् ॥
सिंहस्कन्दाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं ।
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥

ॐ ऋषिरुवाच ॥ 1 ॥

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये ।
तस्मिन् दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या ।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा ।
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ 2 ॥

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या ।
निःशेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां ।
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥ 3 ॥

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ।
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ।
सा चण्डिकाऽखिलजगत्परिपालनाय ।
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥ 4 ॥

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः ।
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा ।
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वं ॥ 5 ॥

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत् ।
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि ।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि ।
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ 6 ॥

हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषैः ।
न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतं ।
अव्याकृता हि परमा प्रकृति स्त्वमाद्या ॥ 7 ॥

यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन ।
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु ।
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥ 8 ॥

या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्वं ।
अभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः ।
मोक्षार्थिभिर् मुनिभिरस्तसमस्तदोषैर् ।
विद्याऽसि सा भगवती परमा हि देवि ॥ 9 ॥

शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानं ।
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम् ।
देवी त्रयी भगवती भवभावनाय ।
वार्तासि सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ॥ 10 ॥

मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा ।
दुर्गाऽसि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा ।
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥ 11 ॥

ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र ।
बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम् ।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि ।
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥ 12 ॥

दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल ।
मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः ।
प्राणान् मुमोच महिष स्तदतीव चित्रं ।
कैर् जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥ 13 ॥

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय ।
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि ।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन् ।
नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥ 14 ॥

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां ।
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ।
धन्या स्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा ।
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥ 15 ॥

धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा ।
ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती प्रसादाल् ।
लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ 16 ॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः ।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या ।
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥ 17 ॥

एभिर् हतैर् जगदुपैति सुखं तथैते ।
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ।
सङ्ग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु ।
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि ॥ 18 ॥

दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म ।
सर्वासुरानरिषु यत् प्रहिणोषि शस्त्रम् ।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता ।
इत्थं मतिर् भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी ॥ 19 ॥

खड्गप्रभानिकरविस्फुरणै स्तथोग्रैः ।
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड ।
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥ 20 ॥

दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं ।
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः ।
वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां ।
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥ 21 ॥

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य ।
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा ।
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥ 22 ॥

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन ।
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तम् ।
अस्माकमुन्मदसुरारिभवं नम स्ते ॥ 23 ॥

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ 24 ॥

प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ 25 ॥

सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मां स्तथा भुवम् ॥ 26 ॥

खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ 27 ॥

ऋषिरुवाच ॥ 28 ॥

एवं स्तुता सुरैर् दिव्यैः कुसुमैर् नन्दनोद्भवैः ।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः ॥ 29 ॥

भक्त्या समस्तै स्त्रिदशैर् दिव्यैर् धूपैः सुधूपिता ।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान् ॥ 30 ॥

देव्युवाच ॥ 31 ॥

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितं ॥ 32 ॥

देवा ऊचुः ॥ 33 ॥

भगवत्या कृतं सर्वं न किञ्चिदवशिष्यते ।
यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ॥ 34 ॥

यदि चापि वरो देय स्त्वयाऽस्माकं महेश्वरि ।
संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ॥ 35 ॥

यश्च मर्त्यः स्तवैरेभि स्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ।
तस्य वित्तर्द्धिविभवैर् धनदारादिसम्पदाम् ॥ 36 ॥

वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ॥ 37 ॥

ऋषिरुवाच ॥ 38 ॥

इति प्रसादिता देवैर् जगतोऽर्थे तथात्मनः ।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप ॥ 39 ॥

इत्येतत् कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा ।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्प्रयहितैषिणी ॥ 40 ॥

पुनश्च गौरीदेहात् सा समुद्भूता यथाभवत् ।
वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः ॥ 41 ॥

रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी ।
तच्छृणुष्व मयाख्यातं यथावत् कथयामि ते ।
ह्रीं ॐ ॥ 42 ॥

॥ जय जय श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः समाप्तम् ॥

॥ आहुति ॥

ह्रीं जयन्ती साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्रीमहालक्ष्म्यै लक्ष्मीबीजाधिष्ठायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

॥ चण्डीहोम निवेदन ॥

उवाच-पद मन्त्र *5*, अर्धश्लोक मन्त्र *2*, श्लोक मन्त्र *35* — कुल *42*
पूर्व मन्त्र *217* + इस अध्याय के मन्त्र *42* = *259*

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ॐ साङ्गायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै त्रिवर्णात्मिकायै शक्तिलक्ष्म्यै
सघृतं पूगीफलं निवेदन समर्पयामि ॐ नमश्श्रीचण्डिकायै

(घी के साथ सुपारी अर्पित करें)

॥ उत्तम चरित्रम् ॥

॥ देव्या दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥

अस्य श्री उत्तरचरित्रस्य रुद्र ऋषिः ।
श्रीमहासरस्वती देवता । अनुष्टुप् छन्दः ।
भीमा शक्तिः । भ्रामरी बीजम् । सूर्य स्तत्त्वम् ।
सामवेदः स्वरूपम् ।
श्रीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तरचरित्रपाठे विनियोगः ॥

॥ ध्यानं ॥

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं ।
हस्ताब्जैर् दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ॥
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा ।
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥

॥ ॐ क्लीं ऋषिरुवाच ॥ 1 ॥

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः ।
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात् ॥ 2 ॥

तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम् ।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च ॥ 3 ॥

तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर् वह्निकर्म च ।
ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः ॥ 4 ॥

हृताधिकारा स्त्रिदशा स्ताभ्यां सर्वे निराकृताः ।
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ॥ 5 ॥

तयास्माकं वरो दत्तो यथापत्सु स्मृताखिलाः ।
भवतां नाशयिष्यामि तत् क्षणात् परमापदः ॥ 6 ॥

इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम् ।
जग्मु स्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥ 7 ॥

॥ देवा ऊचुः ॥ 8 ॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ 9 ॥

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ 10 ॥

कल्याण्यै प्रणता वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः ।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ 11 ॥

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ 12 ॥

अतिसौम्यतिरौद्रायै नता स्तस्यै नमो नमः ।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥ 13 ॥

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ।
नम स्तस्यै ॥ 14 ॥ नम स्तस्यै ॥ 15 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 16 ॥

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ।
नम स्तस्यै ॥ 17 ॥ नम स्तस्यै ॥ 18 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 19 ॥

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 20 ॥ नम स्तस्यै ॥ 21 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 22 ॥

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 23 ॥ नम स्तस्यै ॥ 24 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 25 ॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 26 ॥ नम स्तस्यै ॥ 27 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 28 ॥

या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 29 ॥ नम स्तस्यै ॥ 30 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 31 ॥

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 32 ॥ नम स्तस्यै ॥ 33 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 34 ॥

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 35 ॥ नम स्तस्यै ॥ 36 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 37 ॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 38 ॥ नम स्तस्यै ॥ 39 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 40 ॥

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 41 ॥ नम स्तस्यै ॥ 42 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 43 ॥

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 44 ॥ नम स्तस्यै ॥ 45 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 46 ॥

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 47 ॥ नम स्तस्यै ॥ 48 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 49 ॥

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 50 ॥ नम स्तस्यै ॥ 51 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 52 ॥

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 53 ॥ नम स्तस्यै ॥ 54 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 55 ॥

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 56 ॥ नम स्तस्यै ॥ 57 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 58 ॥

या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 59 ॥ नम स्तस्यै ॥ 60 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 61 ॥

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 62 ॥ नम स्तस्यै ॥ 63 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 64 ॥

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 65 ॥ नम स्तस्यै ॥ 66 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 67 ॥

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 68 ॥ नम स्तस्यै ॥ 69 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 70 ॥

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 71 ॥ नम स्तस्यै ॥ 72 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 73 ॥

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 74 ॥ नम स्तस्यै ॥ 75 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 76 ॥

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥ 77 ॥

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत् ।
नम स्तस्यै ॥ 78 ॥ नम स्तस्यै ॥ 79 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 80 ॥

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात् तथा ।
सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी ।
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ 81 ॥

या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैर् ।
अस्माभिरीशा च सुरैर् नमस्यते ।
या च स्मृता तत् क्षणमेव हन्ति नः ।
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ 82 ॥

॥ ऋषिरुवाच ॥ 83 ॥

एवं स्तवाभियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती ।
स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥ 84 ॥

साब्रवीत् तान् सुरान् सुभ्रूर् भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का ।
शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताऽब्रवीच्छिवा ॥ 85 ॥

स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः ।
देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः ॥ 86 ॥

शरीरकोशाद् यत् तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका ।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥ 87 ॥

तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत् सापि पार्वती ।
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥ 88 ॥

ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम् ।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः ॥ 89 ॥

ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता सातीव सुमनोहरा ।
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम् ॥ 90 ॥

नैव तादृक् क्वचिद् रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम् ।
ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर ॥ 91 ॥

स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिश स्त्विषा ।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति ॥ 92 ॥

यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो ।
त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे ॥ 93 ॥

ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात् ।
पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः ॥ 94 ॥

विमानं हंससंयुक्तमेतत् तिष्ठति तेऽङ्गणे ।
रत्नभूतमिहानीतं यदासीद् वेधसोऽद्भुतम् ॥ 95 ॥

निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात् ।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर् मालामम्लानपङ्कजाम् ॥ 96 ॥

छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि तिष्ठति ।
तथायं स्यन्दनवरो यः पुरासीत् प्रजापतेः ॥ 97 ॥

मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता ।
पाशः सलिलराजस्य भ्रातु स्तव परिग्रहे ॥ 98 ॥

निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः ।
वह्निश्चापि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी ॥ 99 ॥

एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते ।
स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान् न गृह्यते ॥ 100 ॥

॥ ऋषिरुवाच ॥ 101 ॥

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः ।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम् ॥ 102 ॥

इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान् मम ।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥ 103 ॥

स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने ।
सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ॥ 104 ॥

॥ दूत उवाच ॥ 105 ॥

देवि दैत्येश्वरः शुम्भ स्त्रैलोक्ये परमेश्वरः ।
दूतोऽहं प्रेषित स्तेन त्वत् सकाशमिहागतः ॥ 106 ॥

अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु ।
निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ॥ 107 ॥

मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः ।
यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् ॥ 108 ॥

त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः ।
तथैव गजरत्नं च हृतं देवेन्द्रवाहनम् ॥ 109 ॥

क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः ।
उच्चैःश्रवससञ्ज्ञं तत् प्रणिपत्य समर्पितम् ॥ 110 ॥

यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च ।
रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ॥ 111 ॥

स्त्रीरत्नभूतां तां देवीं लोके मन्यामहे वयम् ।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् ॥ 112 ॥

मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम् ।
भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः ॥ 113 ॥

परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत् परिग्रहात् ।
एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत् परिग्रहतां व्रज ॥ 114 ॥

॥ ऋषिरुवाच ॥ 115 ॥

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ॥ 116 ॥

॥ देव्युवाच ॥ 117 ॥

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किञ्चित् त्वयोदितम् ।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ॥ 118 ॥

किं त्वत्र यत् प्रतिज्ञातं मिथ्या तत् क्रियते कथम् ।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात् प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥ 119 ॥

यो मां जयति सङ्ग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति ।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥ 120 ॥

तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः ।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु ॥ 121 ॥

॥ दूत उवाच ॥ 122 ॥

अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः ।
त्रैलोक्ये कः पुमां स्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः ॥ 123 ॥

अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि ।
किं तिष्ठन्ति सुमुखे देवि पुनः स्त्री त्वमेकिका ॥ 124 ॥

इन्द्राद्याः सकला देवा स्तस्थुर् येषां न संयुगे ।
शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम् ॥ 125 ॥

सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ।
केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि ॥ 126 ॥

॥ देव्युवाच ॥ 127 ॥

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान् ।
किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा ॥ 128 ॥

स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत् सर्वमादृतः ।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु यत् ॥ 129 ॥

॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्या दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः समाप्तम् ॥

॥ आहुति ॥

क्लीं जयन्ती साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै धूम्राक्ष्यै विष्णुमायादि चतुर्विंशद् देवताभ्यो महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

॥ चण्डीहोम निवेदन ॥

उवाच-पद मन्त्र *9,* अर्धश्लोक मन्त्र *66,* श्लोक मन्त्र *54* — कुल *129*
पूर्व मन्त्र *259 +* इस अध्याय के मन्त्र *129 = 388*

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ॐ साङ्गायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै
लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्यै श्रीमहालक्ष्म्यै
सघृतं बीजपूरफलं निवेदन समर्पयामि ॐ नमश्श्रीचण्डिकायै

(गाय के घी के साथ बिजौरा नींबू (मातुलुंग) अर्पित करें)

॥ शुम्भनिशुम्भसेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥

॥ ध्यानं ॥

नगाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली ।
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम् ।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडाम्बराम् ।
सर्वेश्वरभैरवाङ्गनिलयां पद्मावतीं चिन्तये ॥

॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ 1 ॥

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः ।
समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ॥ 2 ॥

तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः ।
सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् ॥ 3 ॥

हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः ।
तामानय बलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ 4 ॥

तत् परित्राणदः कश्चिद् यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः ।
स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा ॥ 5 ॥

॥ ऋषिरुवाच ॥ 6 ॥

तेनाज्ञप्त स्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः ।
वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ ॥ 7 ॥

स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम् ।
जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ 8 ॥

न चेत् प्रीत्याद्य भवती मद् भर्तारमुपैष्यति ।
ततो बलान् नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ 9 ॥

॥ देव्युवाच ॥ 10 ॥

दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः ।
बलान् नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम् ॥ 11 ॥

॥ ऋषिरुवाच ॥ 12 ॥

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत् तामसुरो धूम्रलोचनः ।
हूङ्कारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका तदा ॥ 13 ॥

अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका ।
ववर्ष सायकै स्तीक्ष्णै स्तथा शक्तिपरश्वधैः ॥ 14 ॥

ततो धुतसटः कोपात् कृत्वा नादं सुभैरवम् ।
पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः ॥ 15 ॥

कांश्चित् करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान् ।
आक्रान्त्या चाधरेणान्यान् जघान स महासुरान् ॥ 16 ॥

केषाञ्चित् पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी ।
तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक् ॥ 17 ॥

विच्छिन्नबाहुशिरसः कृता स्तेन तथापरे ।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः ॥ 18 ॥

क्षणेन तद् बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना ।
तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना ॥ 19 ॥

श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम् ।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः ॥ 20 ॥

चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः ।
आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥ 21 ॥

हे चण्ड हे मुण्ड बलैर् बहुभिः परिवारितौ ।
तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥ 22 ॥

केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि ।
तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर् विनिहन्यताम् ॥ 23 ॥

तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते ।
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॥ 24 ॥

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भनिशुम्भसेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥

॥ आहुति ॥

ॐ क्लीं जयन्ती साङ्गायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

॥ चण्डीहोम निवेदन ॥

उवाच-पद मन्त्र *4*, श्लोक मन्त्र *20* — कुल *24*
पूर्व मन्त्र *388* + इस अध्याय के मन्त्र *24* = *412*

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ॐ साङ्गायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै शताक्ष्यै धूम्राक्ष्यै
सघृतं नारिकेलफलं निवेदन समर्पयामि ॐ नमश्श्रीचण्डिकायै

(गाय के घी के साथ नारियल अर्पित करें)

॥ चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥

॥ ध्यानं ॥

ध्यायें रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीम् ।
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम् ।
कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्राम् ।
मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम् ॥

॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ 1 ॥

आज्ञप्ता स्ते ततो दैत्या श्चण्डमुण्डपुरोगमाः ।
चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥ 2 ॥

ददृशु स्ते ततो देवी मीषद्धासां व्यवस्थिताम् ।
सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥ 3 ॥

ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः ।
आकृष्टचापासिधरा स्तथाऽन्ये तत् समीपगाः ॥ 4 ॥

ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति ।
कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत् तदा ॥ 5 ॥

भ्रुकुटीकुटिलात् तस्या ललाटफलकाद् द्रुतम् ।
काली करालवदना विनिष्क्रान्ताऽसिपाशिनी ॥ 6 ॥

विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा ।
द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसाऽतिभैरवा ॥ 7 ॥

अतिविस्तारवदना जिह्वाललन भीषणा ।
निमग्ना रक्तनयना नादापूरित दिङ्मुखा ॥ 8 ॥

सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान् ।
सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद् बलम् ॥ 9 ॥

पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहियोधघण्टासमन्वितान् ।
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् ॥ 10 ॥

तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह ।
निक्षिप्य वक्त्रे दशनै श्चर्वयन्त्यतिभैरवम् ॥ 11 ॥

एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम् ।
पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत् ॥ 12 ॥

तैर् मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः ।
मुखेन जग्राह रुषा दशनैर् मथितान्यपि ॥ 13 ॥

बलिनां तद् बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम् ।
ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत् तथा ॥ 14 ॥

असिना निहताः केचित् केचित् खट्वाङ्गताडिताः ।
जग्मुर् विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहता स्तथा ॥ 15 ॥

क्षणेन तद् बलं सर्वमसुराणां निपातितम् ।
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् ॥ 16 ॥

शरवर्षैर् महाभीमैर् भीमाक्षीं तां महासुरः ।
छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः ॥ 17 ॥

तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम् ।
बभुर् यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम् ॥ 18 ॥

ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी ।
काली करालवदना दुर्दर्शदशनोज्ज्वला ॥ 19 ॥

उत्थाय च महासिं देवी चण्डमधावत ।
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिर स्तेनासिनाच्छिनत् ॥ 20 ॥

अथ मुण्डोऽभ्यधावत् तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् ।
तमप्यपातयद् भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा ॥ 21 ॥

हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् ।
मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् ॥ 22 ॥

शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च ।
प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम् ॥ 23 ॥

मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू ।
युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि ॥ 24 ॥

॥ ऋषिरुवाच ॥ 25 ॥

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ ।
उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः ॥ 26 ॥

यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता ।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवी भविष्यसि ॥ 27 ॥

॥ जय जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः समाप्तम् ॥

॥ आहुति ॥

ॐ क्लीं जयन्ती साङ्गायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै कालीचामुण्डादेव्यै कर्पूरबीजाधिष्ठायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

॥ चण्डीहोम निवेदन ॥

उवाच-पद मन्त्र *2,* श्लोक मन्त्र *25* — कुल *27*
पूर्व मन्त्र *412* + इस अध्याय के मन्त्र *27 = 439*

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ॐ साङ्गायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै काली चामुण्डादेव्यै कूष्माण्डफलखण्डं समर्पयामि ॐ नमश्श्रीचण्डिकायै

(सफ़ेद कद्दू (कूष्माण्ड) का टुकड़ा अर्पित करें)

॥ रक्तबीजवधो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥

॥ ध्यानं ॥

अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशपुष्पबाणचापाम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ॥

॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ 1 ॥

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते ।
बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ॥ 2 ॥

ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान् ।
उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ॥ 3 ॥

अद्य सर्वबलैर् दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः ।
कम्बूनां चतुरशीतिर् निर्यान्तु स्वबलैर् वृताः ॥ 4 ॥

कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै ।
शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥ 5 ॥

कालका दौर्हृदा मौर्वाः कालिकेया स्तथासुराः ।
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ॥ 6 ॥

इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः ।
निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर् बहुभिर् वृतः ॥ 7 ॥

आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत् सैन्यमतिभीषणम् ।
ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् ॥ 8 ॥

ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान् नृप ।
घण्टास्वनेन तान् नादानम्बिका चोपबृंहयत् ॥ 9 ॥

धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा ।
निनादैर् भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना ॥ 10 ॥

तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यै श्चतुर्दिशम् ।
देवी सिंह स्तथा काली सरोषैः परिवारिताः ॥ 11 ॥

एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् ।
भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥ 12 ॥

ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः ।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपै श्चण्डिकां ययुः ॥ 13 ॥

यस्य देवस्य यद्रूपं यथा भूषणवाहनम् ।
तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ ॥ 14 ॥

हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः ।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर् ब्रह्माणीत्यभिधीयते ॥ 15 ॥

माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी ।
महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा ॥ 16 ॥

कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना ।
योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी ॥ 17 ॥

तथैव वैष्णवी शक्तिर् गरुडोपरि संस्थिता ।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥ 18 ॥

यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः ।
शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम् ॥ 19 ॥

नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः ।
प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः ॥ 20 ॥

वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता ।
प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्र स्तथैव सा ॥ 21 ॥

ततः परिवृत स्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः ।
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याह चण्डिकाम् ॥ 22 ॥

ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा ।
चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी ॥ 23 ॥

सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता ।
दूतत्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ 24 ॥

ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ ।
ये चान्ये दानवा स्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥ 25 ॥

त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः ।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥ 26 ॥

बलावलेपादथ चेद् भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः ।
तदा गच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥ 27 ॥

यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम् ।
शिवदूतीति लोकेऽस्मिं स्ततः सा ख्यातिमागता ॥ 28 ॥

तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः ।
अमर्षापूरिता जग्मुर् यत्र कात्यायनी स्थिता ॥ 29 ॥

ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः ।
ववर्षुरुद्धतामर्षा स्तां देवीममरारयः ॥ 30 ॥

सा च तान् प्रहितान् बाणान् शूलशक्तिपरश्वधान् ।
चिच्छेद लीलयाध्मातधनुर्मुक्तैर् महेषुभिः ॥ 31 ॥

तस्याग्रत स्तथा काली शूलपातविदारितान् ।
खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन् कुर्वन्ती व्यचरत् तदा ॥ 32 ॥

कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः ।
ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून् येन येन स्म धावति ॥ 33 ॥

माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी ।
दैत्यान् जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना ॥ 34 ॥

ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः ।
पेतुर् विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥ 35 ॥

तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः ।
वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः ॥ 36 ॥

नखैर् विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान् ।
नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा ॥ 37 ॥

चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः ।
पेतुः पृथिव्यां पतितां स्तांश्चखादाथ सा तदा ॥ 38 ॥

इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान् ।
दृष्ट्वाभ्युपायैर् विविधैर् नेशुर् देवारिसैनिकाः ॥ 39 ॥

पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृगणार्दितान् ।
योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः ॥ 40 ॥

रक्तबिन्दुर् यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः ।
समुत्पतति मेदिन्यां तत् प्रमाणो महासुरः ॥ 41 ॥

युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः ।
ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् ॥ 42 ॥

कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम् ।
समुत्तस्थु स्ततो योधा स्तद्रूपा स्तत् पराक्रमाः ॥ 43 ॥

यावन्तः पतिता स्तस्य शरीराद् रक्तबिन्दवः ।
तावन्तः पुरुषा जाता स्तद्वीर्यबलविक्रमाः ॥ 44 ॥

ते चापि युयुधु स्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः ।
समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम् ॥ 45 ॥

पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा ।
ववाह रक्तं पुरुषा स्ततो जाताः सहस्रशः ॥ 46 ॥

वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह ।
गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम् ॥ 47 ॥

वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः ।
सहस्रशो जगद् व्याप्तं तत् प्रमाणैर् महासुरैः ॥ 48 ॥

शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना ।
माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम् ॥ 49 ॥

स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक् ।
मातॄः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥ 50 ॥

तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर् भुवि ।
पपात यो वै रक्तौघ स्तेनासं शतशोऽसुराः ॥ 51 ॥

तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत् ।
व्याप्तमासीत् ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम् ॥ 52 ॥

तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरम् ।
उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥ 53 ॥

मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून् महासुरान् ।
रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना ॥ 54 ॥

भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान् महासुरान् ।
एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥ 55 ॥

भक्ष्यमाणा स्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे ।
इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् ॥ 56 ॥

मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम् ।
ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम् ॥ 57 ॥

न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि ।
तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ॥ 58 ॥

यत स्तत स्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति ।
मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान् महासुराः ॥ 59 ॥

तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् ॥ 60 ॥

देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः ।
जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम् ॥ 61 ॥

स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः ।
नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः ॥ 62 ॥

तत स्ते हर्षमतुलमवापु स्त्रिदशा नृप ।
तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः ॥ 63 ॥

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये रक्तबीजवधो नाम अष्टमोऽध्यायः समाप्तम् ॥

॥ आहुति ॥

ॐ जयन्ती साङ्गायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै रक्ताक्ष्यै अष्टमातृसहितायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

॥ चण्डीहोम निवेदन ॥

उवाच-पद मन्त्र *1*, अर्धश्लोक मन्त्र *1*, श्लोक मन्त्र *61* — कुल *63*
पूर्व मन्त्र *439* + इस अध्याय के मन्त्र *63* = *502*

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ॐ साङ्गायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै
अष्टमातृकासहितायै रक्ताक्षीदेव्यै
सघृतं इक्षुखण्डं निवेदन समर्पयामि ॐ नमश्श्रीचण्डिकायै

(गाय के घी के साथ गन्ने का टुकड़ा अर्पित करें)

॥ निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः ॥

॥ ध्यानं ॥

ॐ बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां
पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः ।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणां त्रिनेत्रां
अर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि ॥

॥ ॐ राजोवाच ॥ 1 ॥

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम ।
देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् ॥ 2 ॥

भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते ।
चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः ॥ 3 ॥

॥ ऋषिरुवाच ॥ 4 ॥

चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते ।
शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥ 5 ॥

हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन् ।
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया ॥ 6 ॥

तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः ।
सन्दष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः ॥ 7 ॥

आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः ।
निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥ 8 ॥

ततो युद्धमतीवासीद्देव्या शुम्भनिशुम्भयोः ।
शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ॥ 9 ॥

चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः ।
ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥ 10 ॥

निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम् ।
अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् ॥ 11 ॥

ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम् ।
निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ॥ 12 ॥

छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः ।
तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् ॥ 13 ॥

कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः ।
आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् ॥ 14 ॥

आविद्ध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति ।
सापि देव्यास्त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता ॥ 15 ॥

ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम् ।
आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले ॥ 16 ॥

तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे ।
भ्रातर्यतीव सङ्क्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् ॥ 17 ॥

स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः ।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥ 18 ॥

तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत् ।
ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम् ॥ 19 ॥

पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च ।
समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना ॥ 20 ॥

ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः ।
पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश ॥ 21 ॥

ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत् ।
कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः ॥ 22 ॥

अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह ।
वैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ ॥ 23 ॥

दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा ।
तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः ॥ 24 ॥

शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा ।
आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया ॥ 25 ॥

सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् ।
निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते ॥ 26 ॥

शुम्भमुक्ताञ्छरान् देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान् ।
चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ 27 ॥

ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम् ।
स तदाभिहतो भूमौ मूर्छितो निपपात ह ॥ 28 ॥

ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः ।
आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ॥ 29 ॥

पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः ।
चक्रायुधेन दितिजश्चादयामास चण्डिकाम् ॥ 30 ॥

ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी ।
चिच्छेद देवी चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान् ॥ 31 ॥

ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम् ।
अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृतः ॥ 32 ॥

तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका ।
खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे ॥ 33 ॥

शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम् ।
हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका ॥ 34 ॥

भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः ।
महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् ॥ 35 ॥

तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः ।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि ॥ 36 ॥

ततः सिंहश्च खादोग्रदंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् ।
असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान् ॥ 37 ॥

कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः ।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥ 38 ॥

माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे ।
वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि ॥ 39 ॥

खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः ।
वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे ॥ 40 ॥

केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात् ।
भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः ॥ 41 ॥

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः समाप्तम् ॥

॥ आहुति ॥

ॐ क्लीं जयन्ती साङ्गायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

॥ चण्डीहोम निवेदन ॥

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ॐ साङ्गायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै वाग्भवबीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै
सघृतं कूष्माण्डखण्डं (इक्षुखण्डं) समर्पयामि ॐ नमश्श्रीचण्डिकायै

(गाय के घी के साथ सफ़ेद कद्दू का टुकड़ा या गन्ने का टुकड़ा अर्पित करें)

॥ शुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः ॥

॥ ध्यानं ॥

ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि-
नेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलाम् ।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम् ॥

॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ 1 ॥

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम् ।
हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥ 2 ॥

बलावलेपदुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह ।
अन्यासां बलमाश्रित्य युध्यसे चातिमानिनी ॥ 3 ॥

॥ देव्युवाच ॥ 4 ॥

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा ।
पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥ 5 ॥

ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणी प्रमुखा लयम् ।
तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका ॥ 6 ॥

॥ देव्युवाच ॥ 7 ॥

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता ।
तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥ 8 ॥

॥ ऋषिरुवाच ॥ 9 ॥

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः ।
पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम् ॥ 10 ॥

शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथा चास्त्रैः सुदारुणैः ।
तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयङ्करम् ॥ 11 ॥

दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका ।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥ 12 ॥

मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी ।
बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः ॥ 13 ॥

ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः ।
सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥ 14 ॥

छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे ।
चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् ॥ 15 ॥

ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत् ।
अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः ॥ 16 ॥

तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका ।
धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम् ॥ 17 ॥

हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः ।
जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिका निधनोद्यतः ॥ 18 ॥

चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः ।
तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥ 19 ॥

स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः ।
देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत् ॥ 20 ॥

तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले ।
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः ॥ 21 ॥

उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः ।
तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका ॥ 22 ॥

नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम् ।
चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥ 23 ॥

ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह ।
उत्पाट्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ॥ 24 ॥

स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ।
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया ॥ 25 ॥

तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम् ।
जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥ 26 ॥

स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः ।
चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥ 27 ॥

ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि ।
जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः ॥ 28 ॥

उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः ।
सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते ॥ 29 ॥

ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः ।
बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः ॥ 30 ॥

अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः ।
ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥ 31 ॥

जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्तदिग्जनितस्वनाः ॥ 32 ॥

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः समाप्तम् ॥

॥ आहुति ॥

ॐ क्लीं जयन्ती साङ्गायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै कामेश्वर्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

॥ चण्डीहोम निवेदन ॥

उवाच-पद मन्त्र *4*, अर्धश्लोक मन्त्र *1*, श्लोक मन्त्र *27* — कुल *32*
पूर्व मन्त्र *543* + इस अध्याय के मन्त्र *32* = *575*

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ॐ साङ्गायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै सिंहवाहनायै त्रिशूलपाशधारिण्यै
सघृतं मातुलुङ्गफलं निवेदन समर्पयामि ॐ नमश्श्रीचण्डिकायै

(गाय के घी के साथ बिजौरा नींबू (मातुलुंग) अर्पित करें)

॥ नारायणीस्तुतिर्नाम एकादशोऽध्यायः ॥

ध्यानं

ॐ बालार्क विद्युतिमिन्दु किरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रय युक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुश पाशाभीति करां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

ॐ ऋषिरुवाच ॥ 1 ॥

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे
सेन्द्राः सुरा वह्नि पुरोगमास्ताम् ।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभा-
द्विकासि वक्त्राब्ज विकासिताशाः ॥ 2 ॥

देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥ 3 ॥

आधार भूता जगतस्त्वमेका
मही स्वरूपेण यतः स्थितासि ।
अपां स्वरूप स्थितया त्वयैत-
दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्य वीर्ये ॥ 4 ॥

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त वीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्त्वं
वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः ॥ 5 ॥

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्का
ते स्तुतिः स्तव्य परापरोक्तिः ॥ 6 ॥

सर्व भूता यदा देवी भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी ।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥ 7 ॥

सर्वस्य बुद्धि रूपेण जनस्य हृदि संस्थिते ।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 8 ॥

कला काष्ठादि रूपेण परिणाम प्रदायिनि ।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 9 ॥

सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 10 ॥

सृष्टि स्थिति विनाशानां शक्ति भूते सनातनि ।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 11 ॥

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे ।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 12 ॥

हंसयुक्त विमानस्थे ब्रह्माणी रूपधारिणि ।
कौशाम्भः क्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 13 ॥

त्रिशूल चन्द्राहि धरे महावृषभ वाहिनि ।
माहेश्वरी स्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 14 ॥

मयूर कुक्कुट वृते महाशक्ति धरेऽनघे ।
कौमारी रूप संस्थाने नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 15 ॥

शङ्ख चक्र गदा शार्ङ्ग गृहीत परमायुधे ।
प्रसीद वैष्णवी रूपे नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 16 ॥

गृहीतोग्र महाचक्रे दंष्ट्रोद्धृत वसुन्धरे ।
वराह रूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 17 ॥

नृसिंह रूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे ।
त्रैलोक्य त्राण सहिते नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 18 ॥

किरीटिनि महावज्रे सहस्र नयनोज्ज्वले ।
वृत्र प्राण हरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 19 ॥

शिवदूती स्वरूपेण हत दैत्य महाबले ।
घोर रूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 20 ॥

दंष्ट्रा कराल वदने शिरोमाला विभूषणे ।
चामुण्डे मुण्ड मथने नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 21 ॥

लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे ।
महारात्रि महामाये नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 22 ॥

मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि ।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 23 ॥

सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ॥ 24 ॥

एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रय भूषितम् ।
पातु नः सर्व भूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तुते ॥ 25 ॥

ज्वाला करालमत्युग्रमशेषासुर सूदनम् ।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तुते ॥ 26 ॥

हिनस्ति दैत्य तेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ 27 ॥

असुरासृग्वसा पङ्क चर्चितस्ते करोज्ज्वलः ।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ 28 ॥

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ 29 ॥

एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य
धर्मद्विषां देवि महासुराणाम् ।
रूपैरनेकैर्बहुधात्ममूर्तिं
कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या ॥ 30 ॥

विद्यासु शास्त्रेषु विवेक दीपे-
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ।
ममत्व गर्तेऽति महान्धकारे
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥ 31 ॥

रक्षांसि यत्रोग्र विषाश्च नागा
यत्रारयो दस्यु बलानि यत्र ।
दावानलो यत्र तथाब्धि मध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥ 32 ॥

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।
विश्वेश वन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्ति नम्राः ॥ 33 ॥

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरि भीते-
र्नित्यं यथासुर वधादधुनैव सद्यः ।
पापानि सर्व जगतां प्रशमं नयाशु
उत्पात पाक जनितांश्च महोपसर्गान् ॥ 34 ॥

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्ति हारिणि ।
त्रैलोक्य वासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव ॥ 35 ॥

देव्युवाच ॥ 36 ॥

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम् ॥ 37 ॥

देवा ऊचुः ॥ 38 ॥

सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ॥ 39 ॥

देव्युवाच ॥ 40 ॥

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे ।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ॥ 41 ॥

नन्दगोप गृहे जाता यशोदा गर्भ सम्भवा ।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचल निवासिनी ॥ 42 ॥

पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले ।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् ॥ 43 ॥

भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान् महासुरान् ।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमी कुसुमोपमाः ॥ 44 ॥

ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः ।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् ॥ 45 ॥

भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि ।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा ॥ 46 ॥

ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्याम्यहं मुनीन् ।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ॥ 47 ॥

ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेह समुद्भवैः ।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राण धारकैः ॥ 48 ॥

शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि ।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ॥ 49 ॥

दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥ 50 ॥

रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राण कारणात् ।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्र मूर्तयः ॥ 51 ॥

भीमादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥ 52 ॥

तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वासङ्ख्येय षट्पदम् ।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम् ॥ 53 ॥

भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः ।
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ॥ 54 ॥

तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरि सङ्क्षयम् ॥ 55 ॥

॥ इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये नारायणीस्तुतिर्नाम एकादशोऽध्यायः समाप्तम् ॥

आहुति

ॐ क्लीं जयन्ती साङ्गायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठायै गरुड वाहन्यै नारायणी देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

॥ चण्डीहोम निवेदन ॥

उवाच-पद मन्त्र *4*, अर्धश्लोक मन्त्र *1*, श्लोक मन्त्र *50* — कुल *55*
पूर्व मन्त्र *575* + इस अध्याय के मन्त्र *55 = 630*

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ॐ साङ्गायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै सनारायण्यै
सघृतं दाडिमीफलं निवेदन समर्पयामि ॐ नमश्श्रीचण्डिकायै

(गाय के घी के साथ अनार अर्पित करें)

॥ फलश्रुतिर्नाम द्वादशोऽध्यायः ॥

ध्यानं

ॐ विद्युद्दाम समप्रभां मृगपति स्कन्ध स्थितां भीषणां ।
कन्याभिः करवाल खेट विलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्र गदासि खेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

ॐ देव्युवाच ॥ 1 ॥

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः ।
तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम् ॥ 2 ॥

मधुकैटभ नाशं च महिषासुर घातनम् ।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद्वधं शुम्भ निशुम्भयोः ॥ 3 ॥

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः ।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥ 4 ॥

न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद्दुष्कृतोत्था न चापदः ।
भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्ट वियोजनम् ॥ 5 ॥

शत्रुभ्यो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः ।
न शस्त्रानल तोयौघात् कदाचित् सम्भविष्यति ॥ 6 ॥

तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः ।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत् ॥ 7 ॥

उपसर्गानशेषांस्तु महामारी समुद्भवान् ।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥ 8 ॥

यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम ।
सदा न तद्विमोक्ष्यामि सान्निध्यं तत्र मे स्थितम् ॥ 9 ॥

बलि प्रदाने पूजायामग्नि कार्ये महोत्सवे ।
सर्वं ममैतन्माहात्म्यमुच्चार्यं श्राव्यमेव च ॥ 10 ॥

जानताजानता वापि बलि पूजां तथा कृताम् ।
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्नि होमं तथा कृतम् ॥ 11 ॥

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी ।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति समन्वितः ॥ 12 ॥

सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धन धान्य समन्वितः ।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥ 13 ॥

श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः ।
पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् ॥ 14 ॥

रिपवः सङ्क्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते ।
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् ॥ 15 ॥

शान्ति कर्माणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्न दर्शने ।
ग्रह पीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम ॥ 16 ॥

उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रह पीडाश्च दारुणाः ।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥ 17 ॥

बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्ति कारकम् ।
सङ्घात भेदे च नृणां मैत्री करणमुत्तमम् ॥ 18 ॥

दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानि करं परम् ।
रक्षो भूत पिशाचानां पठनादेव नाशनम् ॥ 19 ॥

सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधि कारकम् ।
पशु पुष्पार्घ्य धूपैश्च गन्ध दीपैस्तथोत्तमैः ॥ 20 ॥

विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम् ।
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या ॥ 21 ॥

प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृदुच्चरिते श्रुते ।
श्रुतं हरति पापानि तथारोग्यं प्रयच्छति ॥ 22 ॥

रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम ।
युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्ट दैत्य निबर्हणम् ॥ 23 ॥

तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते ।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः ॥ 24 ॥

ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्तु शुभां मतिम् ।
अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्नि परिवारितः ॥ 25 ॥

दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः ।
सिंह व्याघ्रानुयातो वा वने वा वन हस्तिभिः ॥ 26 ॥

राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा ।
आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥ 27 ॥

पतत्सु चापि शस्त्रेषु सङ्ग्रामे भृश दारुणे ।
सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा ॥ 28 ॥

स्मरन् ममैतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात् ।
मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा ॥ 29 ॥

दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम ॥ 30 ॥

ऋषिरुवाच ॥ 31 ॥

इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्ड विक्रमा ।
पश्यतां सर्व देवानां तत्रैवान्तरधीयत ॥ 32 ॥

तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान्यथा पुरा ।
यज्ञभाग भुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः ॥ 33 ॥

दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ।
जगद्विध्वंसके तस्मिन् महोग्रेऽतुल विक्रमे ॥ 34 ॥

निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः ॥ 35 ॥

एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः ।
सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥ 36 ॥

तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते ।
सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा बुद्धिं प्रयच्छति ॥ 37 ॥

व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर ।
महाकाल्या महाकाले महामारी स्वरूपया ॥ 38 ॥

सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा ।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी ॥ 39 ॥

भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे ।
सैवाभावे तथालक्ष्मीर्विनाशायोपजायते ॥ 40 ॥

स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा ।
ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम् ॥ 41 ॥

॥ इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये फलश्रुतिर्नाम द्वादशोऽध्यायः समाप्तम् ॥

आहुति

ॐ क्लीं जयन्ती साङ्गायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै वरप्रदायै वैष्णवी देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

॥ चण्डीहोम निवेदन ॥

उवाच-पद मन्त्र *2,* अर्धश्लोक मन्त्र *2,* श्लोक मन्त्र *37* — कुल *41*
पूर्व मन्त्र *630* + इस अध्याय के मन्त्र *41* = *671*

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ॐ साङ्गायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै श्रीबालात्रिपुरसुन्दर्यै
सघृतं बिल्वफलं निवेदन समर्पयामि ॐ नमश्श्रीचण्डिकायै देव्यै

(गाय के घी के साथ बेल (बिल्व) फल अर्पित करें)

॥ सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥

ध्यानं

ॐ बालार्क मण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशाङ्कुश वराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे ॥

ॐ ऋषिरुवाच ॥ 1 ॥

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ।
एवं प्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत् ॥ 2 ॥

विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया ।
तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ॥ 3 ॥

मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे ।
तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् ॥ 4 ॥

आराधिता सैव नृणां भोग स्वर्गापवर्गदा ॥ 5 ॥

मार्कण्डेय उवाच ॥ 6 ॥

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः ॥ 7 ॥

प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं संशितव्रतम् ।
निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥ 8 ॥

जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने ।
सन्दर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनमास्थितः ॥ 9 ॥

स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन् ।
तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् ॥ 10 ॥

अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्प धूपाग्नि तर्पणैः ।
निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥ 11 ॥

ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम् ।
एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः ॥ 12 ॥

परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका ॥ 13 ॥

देव्युवाच ॥ 14 ॥

यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन ।
मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् ॥ 15 ॥

मार्कण्डेय उवाच ॥ 16 ॥

ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि ।
अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ॥ 17 ॥

सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः ।
ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम् ॥ 18 ॥

देव्युवाच ॥ 19 ॥

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ।
हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति ॥ 20 ॥

मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ।
सावर्णिको मनुर्नाम भवान्भुवि भविष्यति ॥ 21 ॥

वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः ।
तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति ॥ 22 ॥

मार्कण्डेय उवाच ॥ 23 ॥

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम् ।
बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता ॥ 24 ॥

एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥ 25 ॥

मार्कण्डेय उवाच ॥ 26 ॥

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम् ॥ 27 ॥

बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता ।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥ 28 ॥

सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥ 29 ॥

॥ क्लीं ॐ ॥

॥ इति श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः समाप्तम् ॥

॥ चण्डीहोम निवेदन ॥

उवाच-पद मन्त्र *6*, अर्धश्लोक मन्त्र *11*, श्लोक मन्त्र *12* — कुल *29*
पूर्व मन्त्र *671* + इस अध्याय के मन्त्र *29* = *700*

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ॐ साङ्गायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै
श्रीविद्यायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै
सघृतं कदलीफलं निवेदन समर्पयामि ॐ नमश्श्रीचण्डिकादेव्यै

(गाय के घी के साथ केला अर्पित करें)

॥ श्री सप्तशती देवीमाहात्म्यं समाप्तम् ॥

॥ ॐ तत् सत् ॥

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शङ्खिनी चापिनी बाण भुशुण्डी परिघायुधा ॥
हृदयाय नमः ॥

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥
शिरसे स्वाहा ॥

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥
शिखायै वषट् ॥

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
यानि चात्यन्त घोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥
कवचाय हुम् ॥

ॐ खड्ग शूल गदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥
नेत्रत्रयाय वौषट् ॥

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ॥
करतल करपृष्टाभ्यां नमः ॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः इति दिग्विमोकः ॥

॥ वेदोक्तं देवीसूक्तम् ॥

ॐ अ॒हं रु॒द्रेभि॒र्वसु॑भिश्चराम्य॒हमा᳚दि॒त्यैरु॒त वि॒श्वदे᳚वैः ।
अ॒हं मि॒त्रावरु॑णो॒भा बि॑भर्म्य॒हमि᳚न्द्रा॒ग्नी अ॒हम॒श्विनो॒भा ॥ 1 ॥

अ॒हं सोम॑माह॒नसं᳚ बिभर्म्य॒हं त्वष्टा᳚रमु॒त पू॒षणं॒ भगं᳚ ।
अ॒हं द॑धामि॒ द्रवि॑णं ह॒विष्म॑ते सुप्रा॒व्ये॒ यज॑मानाय सुन्व॒ते ॥ 2 ॥

अ॒हं राष्ट्री᳚ सङ्गम॑नी॒ वसू᳚नां चिकि॒तुषी᳚ प्रथ॒मा य॒ज्ञिया᳚नाम् ।
तां मा᳚ दे॒वा व्य॑दधुः पुरु॒त्रा भूरि॑स्थात्रां॒ भूर्या᳚वे॒शयन्ती᳚म् ॥ 3 ॥

मया॒ सो अन्न॑मत्ति यो वि॒पश्य॑ति॒ यः प्राणि॑ति॒ य ईं᳚ शृ॒णोत्यु॒क्तम् ।
अ॒मन्॒त॒वो मां त उप॑क्षियन्ति॒ श्रु॒धि श्रु॑तं श्रद्धि॒वं ते᳚ वदामि ॥ 4 ॥

अ॒हमे॒व स्व॒यमि॒दं व॑दामि॒ जुष्टं᳚ दे॒वेभि॑रु॒त मानु॑षेभिः ।
यं का॒मये॒ तं त॑मु॒ग्रं कृ॑णोमि॒ तं ब्र॒ह्माणं॒ तमृषिं॒ तं सु॑मे॒धाम् ॥ 5 ॥

अ॒हं रु॒द्राय॒ धनु॒रात॑नोमि ब्रह्म॒द्विषे॒ शर॑वे हन्त॒वा उं ।
अ॒हं जना᳚य स॒मदं᳚ कृणोम्य॒हं द्यावा᳚पृथि॒वी आवि॑वेश ॥ 6 ॥

अ॒हं सु॑वे पि॒तर॑मस्य मू॒र्धन् मम॒ योनि॑र॒प्स्वन्॒तः स॑मु॒द्रे ।
ततो॒ विति॑ष्ठे॒ भुव॒नानु॒ विश्वो॒तामूं द्यां व॒र्ष्मणोप॑ स्पृशामि ॥ 7 ॥

अ॒हमे॒व वात॑ इव॒ प्रवा᳚म्या॒रभ॑माणा॒ भुव॑नानि॒ विश्वा᳚ ।
प॒रो दि॒वा पर॒ ए॒ना पृ॑थि॒व्यैताव॑ती महि॒ना सम्ब॑भूव ॥ 8 ॥

ॐ शान्ति॒ः शान्ति॒ः शान्ति॑ः ॥

॥ इति ऋग्वेदोक्तं देवीसूक्तं समाप्तम् ॥
॥ तत् सत् ॥

॥ अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम् ॥

(श्रीदेवीमाहात्म्य — पञ्चम अध्याय, मन्त्र 9 – 80)

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ 9 ॥

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ 10 ॥

कल्याण्यै प्रणता वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः ।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ 11 ॥

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ 12 ॥

अतिसौम्यतिरौद्रायै नता स्तस्यै नमो नमः ।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥ 13 ॥

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ।
नम स्तस्यै ॥ 14 ॥ नम स्तस्यै ॥ 15 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 16 ॥

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ।
नम स्तस्यै ॥ 17 ॥ नम स्तस्यै ॥ 18 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 19 ॥

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 20 ॥ नम स्तस्यै ॥ 21 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 22 ॥

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 23 ॥ नम स्तस्यै ॥ 24 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 25 ॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 26 ॥ नम स्तस्यै ॥ 27 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 28 ॥

या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 29 ॥ नम स्तस्यै ॥ 30 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 31 ॥

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 32 ॥ नम स्तस्यै ॥ 33 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 34 ॥

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 35 ॥ नम स्तस्यै ॥ 36 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 37 ॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 38 ॥ नम स्तस्यै ॥ 39 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 40 ॥

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 41 ॥ नम स्तस्यै ॥ 42 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 43 ॥

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 44 ॥ नम स्तस्यै ॥ 45 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 46 ॥

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 47 ॥ नम स्तस्यै ॥ 48 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 49 ॥

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 50 ॥ नम स्तस्यै ॥ 51 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 52 ॥

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 53 ॥ नम स्तस्यै ॥ 54 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 55 ॥

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 56 ॥ नम स्तस्यै ॥ 57 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 58 ॥

या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 59 ॥ नम स्तस्यै ॥ 60 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 61 ॥

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 62 ॥ नम स्तस्यै ॥ 63 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 64 ॥

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 65 ॥ नम स्तस्यै ॥ 66 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 67 ॥

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 68 ॥ नम स्तस्यै ॥ 69 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 70 ॥

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 71 ॥ नम स्तस्यै ॥ 72 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 73 ॥

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ।
नम स्तस्यै ॥ 74 ॥ नम स्तस्यै ॥ 75 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 76 ॥

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥ 77 ॥

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत् ।
नम स्तस्यै ॥ 78 ॥ नम स्तस्यै ॥ 79 ॥ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ 80 ॥

॥ इति तन्त्रोक्तं देवीसूक्तं समाप्तम् ॥

॥ अथ प्राधानिकं रहस्यम् ॥

॥ विनियोगः ॥

ॐ अस्य श्रीसप्तशतीरहस्यत्रयस्य नारायण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः,
महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवता यथोक्तफलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः ।

राजोवाच

भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः ।
एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन्प्रधानं वक्तुमर्हसि ॥ 1 ॥

आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज ।
विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे ॥ 2 ॥

ऋषिरुवाच

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते ।
भक्तोऽसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप ॥ 3 ॥

सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी ।
लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता ॥ 4 ॥

मातुलुङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रती ।
नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्धनि ॥ 5 ॥

तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा ।
शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥ 6 ॥

शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी ।
बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि ॥ 7 ॥

सा भिन्नाञ्जनसङ्काशा दंष्ट्राङ्कितवरानना ।
विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा ॥ 8 ॥

खड्गपात्रशिरःखेटैरलङ्कृतचतुर्भुजा ।
कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणा हि शिरःस्रजम् ॥ 9 ॥

सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा ।
नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः ॥ 10 ॥

तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम् ।
ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते ॥ 11 ॥

महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा ।
निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया ॥ 12 ॥

इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः ।
एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम् ॥ 13 ॥

तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप ।
सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ ॥ 14 ॥

अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी ।
सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ ॥ 15 ॥

महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती ।
आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी ॥ 16 ॥

अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम् ।
युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः ॥ 17 ॥

इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम् ।
हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ ॥ 18 ॥

ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति धातरित्याह तं नरम् ।
श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम् ॥ 19 ॥

महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह ।
एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते ॥ 20 ॥

नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम् ।
जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम् ॥ 21 ॥

स रुद्रः शङ्करः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः ।
त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा ॥ 22 ॥

सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप ।
जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते ॥ 23 ॥

विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः ।
उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा ॥ 24 ॥

एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे ।
चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः ॥ 25 ॥

ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम् ।
रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम् ॥ 26 ॥

स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत् ।
बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान् ॥ 27 ॥

अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभून्नृप ।
महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥ 28 ॥

पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः ।
सञ्जहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः ॥ 29 ॥

महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी ।
निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत् ॥ 30 ॥

नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित् ॥ ॐ ॥ 31 ॥

॥ इति प्राधानिकं रहस्यं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ वैकृतिकं रहस्यम् ॥

ऋषिरुवाच

ॐ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता ।
सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते ॥ 1 ॥

योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा ।
मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः ॥ 2 ॥

दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा ।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया ॥ 3 ॥

स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप ।
रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः ॥ 4 ॥

खड्गबाणगदाशूलचक्रशङ्खभुशुण्डिभृत् ।
परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ ॥ 5 ॥

एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया ।
आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम् ॥ 6 ॥

सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा ।
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥ 7 ॥

श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला ।
रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा ॥ 8 ॥

सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा ।
चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी ॥ 9 ॥

अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ।
आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात् ॥ 10 ॥

अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा ।
चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः ॥ 11 ॥

शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः ।
अलङ्कृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम् ॥ 12 ॥

सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप ।
पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत् ॥ 13 ॥

गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया ।
साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ 14 ॥

दधौ चाष्टभुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत् ।
शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप ॥ 15 ॥

एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति ।
निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ 16 ॥

इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव ।
उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय ॥ 17 ॥

महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती ।
दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम् ॥ 18 ॥

विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे ।
वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम् ॥ 19 ॥

अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना ।
दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत् ॥ 20 ॥

अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप ।
दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥ 21 ॥

कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये ।
यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ 22 ॥

नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ ।
नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत् ॥ 23 ॥

अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः ।
अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी ॥ 24 ॥

महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती ।
ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी ॥ 25 ॥

महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः ।
पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥ 26 ॥

अर्घ्यादिभिरलङ्कारैर्गन्धपुष्पैस्तथाक्षतैः ।
धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः ॥ 27 ॥

रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप ।
(बलिमांसादिपूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता ॥
तेषां किल सुरामांसैर्नोक्ता पूजा नृप क्वचित् ।)
प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना ॥ 28 ॥

सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः ।
वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम् ॥ 29 ॥

पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया ।
दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम् ॥ 30 ॥

वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम् ।
कुर्याच्च स्तवनं धीमांस्तस्या एकाग्रमानसः ॥ 31 ॥

ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः ।
एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह ॥ 32 ॥

चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात् ।
प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ॥ 33 ॥

क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः ।
प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा ॥ 34 ॥

जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः ।
भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत्सुसमाहितः ॥ 35 ॥

प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणम्यारोप्य चात्मनि ।
सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत् ॥ 36 ॥

एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम् ।
भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥ 37 ॥

यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ।
भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी ॥ 38 ॥

तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम् ।
यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि ॥ 39 ॥

॥ इति वैकृतिकं रहस्यं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ मूर्तिरहस्यम् ॥

ऋषिरुवाच

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा ।
स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥ 1 ॥

कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा ।
देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा ॥ 2 ॥

कमलाङ्कुशपाशाब्जैरलङ्कृतचतुर्भुजा ।
इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बुजासना ॥ 3 ॥

या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ ।
तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम् ॥ 4 ॥

रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा ।
रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा ॥ 5 ॥

रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका ।
पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम् ॥ 6 ॥

वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी ।
दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ ॥ 7 ॥

कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी ।
भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ ॥ 8 ॥

खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्ति सा ।
आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च ॥ 9 ॥

अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम् ।
इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम् ॥ 10 ॥

(भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात् ।)

अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुःस्तवम् ।
तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना ॥ 11 ॥

शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना ।
गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी ॥ 12 ॥

सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी ।
मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया ॥ 13 ॥

पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम् ।
काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युभयापहम् ॥ 14 ॥

कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी ।
शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ 15 ॥

विशोका दुष्टदमनी शमनी दुरितापदाम् ।
उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती ॥ 16 ॥

शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायञ्जपन् सम्पूजयन्नमन् ।
अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम् ॥ 17 ॥

भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा ।
विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा ॥ 18 ॥

चन्द्रहासं च डमरुं शिरः पात्रं च बिभ्रती ।
एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता ॥ 19 ॥

तेजोमण्डलदुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत् ।
चित्रानुलेपना देवी चित्राभरणभूषिता ॥ 20 ॥

चित्रभ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते ।
इत्येता मूर्तयो देव्या याः ख्याता वसुधाधिप ॥ 21 ॥

जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः ।
इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया ॥ 22 ॥

व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम् ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम् ॥ 23 ॥

सप्तजन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि ।
पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्वकिल्बिषैः ॥ 24 ॥

देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं महत् ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम् ॥ 25 ॥

(एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि ।
सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत् ।
अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम् ।)

॥ इति मूर्तिरहस्यं सम्पूर्णम् ॥

॥ देवी माहात्म्यं — अपराध क्षमापणा स्तोत्रम् ॥

अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥ 1 ॥

सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥ 2 ॥

अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ 3 ॥

कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे ।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥ 4 ॥

सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत् ।
अतोऽहं विश्वरूपां त्वां नमामि परमेश्वरीम् ॥ 5 ॥

पाठ क्षमापण

यदत्र पाठे जगदम्बिके मया
विसर्गबिन्द्वक्षरहीनमीरितम् ।
तदस्तु सम्पूर्णतमं प्रसादतः
सङ्कल्पसिद्धिश्च सदैव जायताम् ॥ 6 ॥

भक्त्याभक्त्यानुपूर्वं प्रसभकृतिवशाद्व्य
क्तमव्यक्तमम्ब ।
तत्सर्वं साङ्गमास्तां भगवति
त्वत्प्रसादात् प्रसीद ॥ 7 ॥

पूर्णं भवतु तत्सर्वं
त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ।
प्रसादं कुरु मे देवि
दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ॥ 8 ॥

॥ इति अपराध क्षमापणा स्तोत्रं समाप्तम् ॥